SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

# यीशु कौन है? — स्ट्रॉन्ग नंबरों के साथ एक KJV बाइबल अध्ययन

**यीशु कौन है · उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक बाइबल के माध्यम से एक यात्रा**

*मौलिक बाइबिल सिद्धांत — यीशु मसीह का सुसमाचार*

## उद्घाटन शब्द

*यीशु के जन्म से सात सौ वर्ष पहले, एक भविष्यवक्ता ने लिख दिया था कि इस बालक को क्या कहा जाएगा। यह कोई ऐसा नाम नहीं है जो आप किसी मनुष्य को देंगे। इस अध्ययन को पढ़ने के लिए आपको कुछ भी मानने की आवश्यकता नहीं है। आपको केवल देखने के लिए तैयार रहना है। लगभग हर जीवित व्यक्ति ने यीशु का नाम सुना है। बहुत कम लोगों ने वह पढ़ा है जो बाइबल स्वयं उसके बारे में कहती है और उसे स्वयं तौलकर देखा है। आज आप जो कुछ भी मानते हैं, और आपको जो कुछ भी सिखाया गया है, उससे हमें कोई अंतर नहीं पड़ता। हमें प्रसन्नता है कि आप यहाँ मूल स्रोत से यीशु के बारे में अपनी समझ को विस्तृत करने आए हैं। हर पद पूरी तरह से छापा गया है, ताकि आप पूरा वाक्य देखें, न कि उसका कोई टुकड़ा। जहाँ बाइबल सीधे कुछ कहती है, यह अध्ययन वही कहता है। जहाँ कोई निष्कर्ष पदों को साथ-साथ रखने से निकलता है, यह अध्ययन वह भी कहता है। यहाँ कुछ भी किसी एक व्यक्ति के कहे पर निर्भर नहीं करता। अब पढ़िए कि भविष्यवक्ता ने क्या लिखा था।*

## खुलने वाला लंगर

**यशायाह 9:6** क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। (यूह. 1:45, इफि. 2:14)

**एक बालक हमारे लिये जन्मा + एक पुत्र हमें दिया गया → उसका नाम पराक्रमी परमेश्वर कहलाएगा।**

*यीशु के जन्म से सात सौ वर्ष पहले, एक भविष्यवक्ता ने लिखा था कि यह बालक पराक्रमी परमेश्वर कहलाएगा। शिशु यीशु एक चरनी में लेटा हुआ था। इस पद को धीरे-धीरे पढ़ें। ये पद इस अध्ययन का संपूर्ण संदेश बताते हैं।*

### क. वह परमेश्वर जिसने कहा "हम" — एक परमेश्वर, और बोलनेवाले एक से अधिक

**A1. उत्पत्ति 1:26** फिर परमेश्वर ने कहा, “हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।” (याकू. 3:9) (27) तब परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा, अपने ही स्वरूप में परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की; नर और नारी के रूप में उसने मनुष्यों की सृष्टि की। (मत्ती 19:4, मर. 10:6, प्रेरि. 17:29, 1 कुरि. 11:7, कुलु. 3:10, 1 तीमु. 2:13)

**हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं → इसलिये परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार सृजा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 1:26 और उत्पत्ति 1:27 को एक साथ पढ़ो। दोनों वचनों के बीच के अंतर को नरम मत करो। उत्पत्ति 1:26 में "हम" और "हमारे" कहा गया है। उत्पत्ति 1:27 में "अपने स्वरूप" और "परमेश्वर ने सृजा" कहा गया है, दोनों एकवचन में। बाइबल दोनों वचनों को बिना किसी क्षमा-याचना के एक साथ रखती है। बाइबल केवल दोनों को बताती है।)*

**A2. उत्पत्ति 3:22** फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिए अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।” (प्रका. 2:7, प्रका. 22:2,14,19, उत्प. 3:24, प्रका. 2:7)

**देख, मनुष्य भले या बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है।**

**A3. उत्पत्ति 11:7** इसलिए आओ, हम उतरकर उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।”

**आओ, हम उतरें + उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दें।**

**A4. यशायाह 6:8** तब मैंने प्रभु का यह वचन सुना, “मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?” तब मैंने कहा, “मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।”

**और हमारी ओर से कौन जाएगा + तब मैंने कहा?**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यशायाह 6:8 को ध्यान से देखिए। उस एक ही वचन में दोनों रूप एक ही वाक्य में हैं: "मैं किसे भेजूं" और "हमारे लिए कौन जाएगा।" वही वक्ता एकवचन रूप और बहुवचन रूप को एक साथ प्रयोग करता है। यह कोई लेखन की भूल नहीं है, और यह भी नहीं है कि परमेश्वर स्वयं का वर्णन करने के लिए एक बहुवचन शब्द का उपयोग कर रहा है। यही प्रतिरूप बाइबल की अनेक विभिन्न पुस्तकों में, अनेक शताब्दियों में, कई बार होता है।)*

**A5. व्यवस्थाविवरण 6:4** “हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; (मर. 12:29-33) **[H259 echad ⚑]**

**हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; (मर. 12:29-33.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: व्यवस्थाविवरण 6:4 इस पूरे अध्ययन को नियंत्रित करता है। एक ही परमेश्वर है, और केवल एक ही: न दो, न तीन, न बहुत से। इस अध्ययन में कोई भी पद जो दूसरे परमेश्वर का सुझाव दे, वह गलत पढ़ा गया है, और व्यवस्थाविवरण 6:4 इसकी परीक्षा है। इस पद में "एक" के लिए प्रयुक्त इब्री शब्द पर ध्यान दें। वह शब्द है इखाद (echad)। यह वही शब्द है जो तब प्रयोग होता है जब सांझ और भोर को एक दिन कहा जाता है, यद्यपि दिन के दो भाग होते हैं, और जब पुरुष और उसकी पत्नी को एक तन कहा जाता है, यद्यपि वे दो व्यक्ति हैं। बाइबल ने "एक" के लिए ऐसा शब्द चुना जिसके भीतर एक से अधिक व्यक्ति समाहित हो सकते हैं। उत्पत्ति 1:26 तब यह दर्ज करता है कि परमेश्वर ने कहा, "हम बनाएं।")*

**A6. यशायाह 45:5** मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैं तेरी कमर कसूँगा

**मैं यहोवा हूं + कोई और नहीं है + मेरे सिवा कोई परमेश्वर नहीं है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यशायाह 45:5 इस सत्य के दूसरे पहलू को बताता है, और यह अध्ययन इससे नहीं बचेगा। परमेश्वर स्पष्ट रूप से कहता है कि उसके सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है। इन पृष्ठों में आगे जो कुछ भी मिलेगा, वह कभी भी एक दूसरे परमेश्वर को नहीं जोड़ सकता। जो वास्तव में मिलेगा वह दूसरे परमेश्वर से भी अधिक विचित्र और उत्तम है: वह एक परमेश्वर स्वयं को लोगों पर प्रकट कर रहा है।)*

## B. वह जो यहोवा का दूत कहलाता है — जो परमेश्वर भी कहलाता है

> *हिब्रू शब्द जिसका अनुवाद "स्वर्गदूत" किया गया है, वह है मलाक (H4397)। मलाक का अर्थ है वह जो भेजा गया है। मलाक उस भेजे गए व्यक्ति के कार्य को नाम देता है, न कि उस व्यक्ति की प्रकृति को। नीचे दिए गए वृत्तांतों में ध्यान दें कि बाइबल इस विशेष भेजे गए व्यक्ति के साथ क्या करती है।*

### B1. जंगल में हाजिरा — वह उसका नाम रखती है

**उत्पत्ति 16:7** तब यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर कहा **[H4397 malak ⚑]** (8) “हे सारै की दासी हागार, तू कहाँ से आती और कहाँ को जाती है?” उसने कहा, “मैं अपनी स्वामिनी सारै के सामने से भाग आई हूँ।” (9) यहोवा के दूत ने उससे कहा, “अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह।” (10) और यहोवा के दूत ने उससे कहा, “मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊँगा, यहाँ तक कि बहुतायत के कारण उसकी गिनती न हो सकेगी।”

**यहोवा के दूत ने कहा, मैं तेरे वंश को अत्यन्त बढ़ाऊंगा।**

**उत्पत्ति 16:13** तब उसने यहोवा का नाम जिसने उससे बातें की थीं, अत्ताएलरोई रखकर कहा, “क्या मैं यहाँ भी उसको जाते हुए देखने पाई और देखने के बाद भी जीवित रही?”

**तब उसने यहोवा का नाम जिसने उससे बातें की थीं, अत्ताएलरोई रखकर कहा.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 16 में दो बातें ऐसी हैं जिन पर पाठक को ठहरना चाहिए। पहली बात, जिसे "यहोवा का दूत" कहा गया है, वह कहता है, "मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊँगा।" वह यह नहीं कहता कि "यहोवा तेरे वंश को बहुत बढ़ाएगा।" वह ऐसे बोलता है जैसे वह स्वयं वृद्धि करने वाला है। दूसरी बात, यह बाइबल का मूल पाठ है, न कि हाजिरा की अपनी राय, जो इस यहोवा के दूत को "यहोवा जिस ने उससे बातें की" कहता है। हाजिरा इसी व्यक्ति को "तू परमेश्वर" कहती है। उत्पत्ति की पुस्तक का लेखक हाजिरा से सहमत है।)*

### B2. इसहाक पर हाथ — वह अपनी ही शपथ खाता है

**उत्पत्ति 22:11** तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकारकर कहा, “हे अब्राहम, हे अब्राहम!” उसने कहा, “देख, मैं यहाँ हूँ।” (12) उसने कहा, “उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उसे कुछ कर; क्योंकि तूने जो मुझसे अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।”

**नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है.**

**उत्पत्ति 22:15** फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से अब्राहम को पुकारकर कहा (16) "यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तूने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; (लूका 1:73,74) (17) इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र तट के रेतकणों के समान अनगिनत करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा; (इब्रा. 6:13,14) (18) और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तूने मेरी बात मानी है।"

**मैंने अपनी ही शपथ खाई है, यहोवा की यही वाणी है → तेरे वंश में पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएंगी।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 22:11-18 में दो वाक्यांशों पर विचार करें। पहला वाक्यांश है "तूने अपने पुत्र को मुझसे नहीं रोका।" अब्राहम अपने पुत्र को परमेश्वर को अर्पित कर रहा था। इस वाक्यांश में बोलने वाला कहता है कि पुत्र को वक्ता से नहीं रोका गया। दूसरा वाक्यांश है "यहोवा की यह वाणी है, कि मैंने अपनी ही शपथ खाई है।" प्राचीन समय में, एक व्यक्ति अपने से बड़े किसी की शपथ खाता था। एक सृजित दूत, जो केवल संदेश पहुँचाता है, अपनी ही शपथ नहीं खाता। एक सृजित दूत परमेश्वर के वाचा के नाम से शपथ पर हस्ताक्षर नहीं करता। इब्रानियों 6:13 इसका कारण देता है। इब्रानियों 6:13 कहता है कि परमेश्वर ने अपनी ही शपथ खाई। इब्रानियों 6:13 कारण बताता है: "क्योंकि वह अपने से बड़े किसी की शपथ नहीं खा सकता था।")*

## B3. याकूब एक पुरुष से मल्लयुद्ध करता है — और उस स्थान का नाम "परमेश्वर का मुख" रखता है

**उत्पत्ति 32:24** और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पौ फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा। (25) जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जाँघ की नस को छुआ; और याकूब की जाँघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। (26) तब उसने कहा, "मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होनेवाला है।" याकूब ने कहा, "जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।"

**एक पुरुष उससे मल्लयुद्ध करता रहा → मैं तुझे जाने न दूंगा, जब तक तू मुझे आशीष न दे।**

**उत्पत्ति 32:28** उसने कहा, "तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।" (29) याकूब ने कहा, "मैं विनती करता हूँ, मुझे अपना नाम बता।" उसने कहा, "तू मेरा नाम क्यों पूछता है?" तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया। (30) तब याकूब ने यह कहकर उस स्थान का नाम पनीएल रखा; "परमेश्वर को आमने-सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।"

**राजकुमार के समान तूने परमेश्वर के साथ शक्ति पाई है → मैंने परमेश्वर को आमने-सामने देखा है, और मेरा प्राण बचा है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 32 का पाठ इस व्यक्ति को एक पुरुष कहता है। याकूब के साथ कुश्ती लड़ने वाला यह पुरुष कहता है कि याकूब को परमेश्वर के साथ सामर्थ्य प्राप्त है। याकूब उस स्थान का नाम "परमेश्वर का मुख" रखता है। याकूब कहता है कि उसका जीवन बचा लिया गया। याकूब इस पुरुष से नाम पूछता है। याकूब को कोई नाम नहीं मिलता, केवल एक प्रश्न वापस मिलता है। इस अनुत्तरित नाम के प्रश्न को याद रखें। यही प्रश्न बाइबल की एक अलग पुस्तक में, सैकड़ों वर्षों बाद, फिर से आता है।)*

## B4. जलती हुई झाड़ी — वह स्वर्गदूत जो मैं हूँ हूँ

**निर्गमन 3:2** और परमेश्वर के दूत ने एक कँटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उसने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। (मर. 12:26, लूका 20:37) (3) तब मूसा ने कहा, "मैं उधर जाकर इस बड़े अचम्भे को देखूँगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।" (प्रेरि. 7:30,31) (4) जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, "हे मूसा, हे मूसा!" मूसा ने कहा, "क्या आज्ञा।" (5) उसने कहा, "इधर पास मत आ, और अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।" (प्रेरि. 7:33) (6) फिर उसने कहा, "मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ।" तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुँह ढाँप लिया। (मत्ती 22:32, मर. 12:26, लूका 20:37)

**यहोवा का दूत आग की ज्वाला में दिखाई दिया → परमेश्वर ने झाड़ी के बीच में से उसे पुकारा।**

**निर्गमन 3:14** परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ।" फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'" (प्रका. 1:4,8, प्रका. 4:8, प्रका. 11:17)

**मैं जो हूँ सो हूँ → मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: निर्गमन 3:2 में कहा गया है यहोवा का दूत। इसके दो पद बाद, निर्गमन 3:4 में कहा गया है यहोवा, और परमेश्वर। वही झाड़ी, वही आग, और वही वाणी दोनों में प्रकट होती है। बाइबल इसे कभी भी विरोधाभास के रूप में नहीं मानती। यही वाणी फिर वह नाम देती है जिसे इस्राएल सदा के लिए धारण करेगा: मैं जो हूँ सो हूँ।)*

## भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — जलती हुई झाड़ी और मंदिर के आँगन में यीशु

**यूहन्ना 8:56** तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उसने देखा, और आनन्द किया।" (57) लोगों ने उससे कहा, "अब तक तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तूने अब्राहम को देखा है?" (58) यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" (59) तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।

**अब्राहम के जन्म से पहले मैं हूँ → तब उन्होंने उस पर मारने के लिए पत्थर उठाए।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: इन दोनों दृश्यों को एक साथ रखें और अंतर को सिखाने दें। झाड़ी में, आग से निकलने वाली आवाज़ कहती है मैं हूँ। मूसा झाड़ी के सामने अपना मुख छिपा लेता है। मंदिर में, एक व्यक्ति भीड़ के सामने खड़ा होकर कहता है मैं हूँ। भीड़ पत्थर उठा लेती है। भीड़ इस बात को लेकर उलझन में नहीं थी कि यीशु ने क्या कहा। भीड़ ने यीशु की बात को ठीक-ठीक समझा। भीड़ ने यीशु के शब्दों को पत्थरवाह के योग्य समझा। यह भी ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा "इब्राहीम के होने से पहले, मैं था।" यीशु ने कहा मैं हूँ।)*

## B5. मानोह और उसकी पत्नी — वह नाम जो अद्भुत है

**न्यायियों 13:3** इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, “सुन, बाँझ होने के कारण तेरे बच्चा नहीं; परन्तु अब तू गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा। (लूका 1:31)

**यहोवा का दूत स्त्री को दिखाई दिया → तू गर्भवती होगी, और पुत्र जनेगी।**

**न्यायियों 13:17** मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, “अपना नाम बता, इसलिए कि जब तेरी बातें पूरी हों तब हम तेरा आदरमान कर सके।” **[H6383 piliy ⚑]** (18) यहोवा के दूत ने उससे कहा, “मेरा नाम तो अद्भुत है, इसलिए तू उसे क्यों पूछता है?”

**मेरा नाम तो अद्भुत है, इसलिए तू उसे क्यों पूछता है?**

**न्यायियों 13:20** अर्थात् जब लौ उस वेदी पर से आकाश की ओर उठ रही थी, तब यहोवा का दूत उस वेदी की लौ में होकर मानोह और उसकी पत्नी के देखते-देखते चढ़ गया; तब वे भूमि पर मुँह के बल गिरे। (21) परन्तु यहोवा के दूत ने मानोह और उसकी पत्नी को फिर कभी दर्शन न दिया। तब मानोह ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था। (22) तब मानोह ने अपनी पत्नी से कहा, “हम निश्चय मर जाएँगे, क्योंकि हमने परमेश्वर का दर्शन पाया है।”

**यहोवा का दूत वेदी की ज्वाला में ऊपर चढ़ गया → हम निश्चय मर जाएंगे, क्योंकि हमने परमेश्वर को देखा है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: न्यायियों 13 में तीन बातें उभर कर आती हैं। मानोह नाम पूछता है, ठीक वैसे ही जैसे याकूब ने उत्पत्ति 32 में पूछा था। मानोह से नाम फिर से छिपाया जाता है, इस बार एक बताए गए कारण के साथ। उस कारण के लिए दिया गया हिब्रू शब्द पिलीय (H6383) है। किंग जेम्स संस्करण पिलीय का अनुवाद "गुप्त" के रूप में करता है। पिलीय का अर्थ है जानने के लिए बहुत अद्भुत। पिलीय उसी मूल से आता है जिससे पेले (H6382) आता है, वह शब्द जिसका अनुवाद यशायाह 9:6 में "अद्भुत" किया गया है, जहाँ हमारे लिए जन्मे बालक का नाम रखा गया है। यही यहोवा का दूत फिर वेदी की लौ में ऊपर उठ जाता है। मानोह का अपना निष्कर्ष यह नहीं है कि "हमने एक दूत देखा है।" मानोह का निष्कर्ष है "हमने परमेश्वर को देखा है।")*

## B6. यरीहो के बाहर सेनापति — आराधना की गई, और जूते उतारे गए

**यहोशू 5:13** जब यहोशू यरीहो के पास था तब उसने अपनी आँखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष सामने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जाकर पूछा, “क्या तू हमारी ओर का है, या हमारे बैरियों की ओर का?” **[H8269 sar ⚑]** (14) उसने उत्तर दिया, “नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूँ ।” तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया, और उससे कहा, “अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?” (15) यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा, “अपनी जूती पाँव से उतार डाल, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है।” तब यहोशू ने वैसा ही किया।

**यहोशू अपने मुंह के बल भूमि पर गिरा, और दण्डवत् किया → अपने पांव से जूता उतार दे; क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।**

## भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — दो पुरुषों से जूते उतारने के लिए कहा गया

**निर्गमन 3:5** उसने कहा, “इधर पास मत आ, और अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।” (प्रेरि. 7:33)

**और अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।” (प्रेरि. 7:33.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: ध्यान दें कि लगभग एक ही शब्दों में एक ही आज्ञा दो अलग-अलग व्यक्तियों को, सैकड़ों वर्षों के अंतराल पर दी गई है। झाड़ी के पास, यह आज्ञा उस वाणी से आती है जिसे बाइबल का पाठ यहोवा और परमेश्वर कहता है। यरीहो के बाहर, यह आज्ञा एक ऐसे पुरुष से आती है जो हाथ में तलवार लिए वहाँ खड़ा है। यहोशू अपने मुँह के बल गिरकर इस पुरुष की आराधना करता है। वह पुरुष इस आराधना को अस्वीकार नहीं करता। इसकी तुलना उससे करें जो एक वास्तविक सृजित स्वर्गदूत तब करता है जब कोई पुरुष उस स्वर्गदूत की आराधना करने का प्रयत्न करता है। स्वर्गदूत कहता है, "मैं तेरा सहकर्मी दास हूँ" (प्रकाशितवाक्य 19:10), और "परमेश्वर की आराधना कर" (प्रकाशितवाक्य 22:9)। यूहन्ना ने दो बार एक स्वर्गदूत की आराधना करने का प्रयत्न किया, और दोनों बार स्वर्गदूत ने इसे अस्वीकार कर दिया। यरीहो के बाहर यहोशू की आराधना को किसी ने अस्वीकार नहीं किया।)*

## B7. अब नया नियम एक बहुत स्पष्ट बात कहता है

**यूहन्ना 1:18** परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया। **[G1834 exegeomai ⚑] [G3439 monogenes ⚑]**

**परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा → एकलौते पुत्र ने उसे प्रगट किया है।**

**यूहन्ना 5:37** और पिता जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है;

**तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है.**

**1 तीमुथियुस 6:16** और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। उसकी प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन। (1 तीमु. 1:17)

**जो उस ज्योति में रहता है जिसके पास कोई मनुष्य नहीं पहुंच सकता → जिसे किसी मनुष्य ने न देखा है, न देख सकता है।**

> *अब बाइबल के दोनों भागों को एक साथ रखकर दोनों भागों को साथ-साथ पढ़ें।*

> *पुराना नियम बार-बार कहता है कि लोगों ने इस व्यक्ति को देखा, इस व्यक्ति से बात की, इस व्यक्ति के सामने भोजन किया, इस व्यक्ति के साथ कुश्ती लड़ी, और जीवित रहे।*

> *नया नियम स्पष्ट रूप से और तीन बार कहता है कि परमेश्वर पिता को न तो कभी किसी ने देखा है, और न ही कोई परमेश्वर पिता को देख सकता है।*

> *दोनों कथन सत्य हैं। इसलिए पुराने नियम में जिस व्यक्ति को लोगों ने देखा, और जिस पिता को लोग नहीं देख सके, वे एक ही व्यक्ति नहीं हैं। यूहन्ना बताता है कि देखा गया व्यक्ति कौन है। वह कहता है कि देखा गया व्यक्ति एकलौता पुत्र है, वह पुत्र जो पिता की गोद में है, और इस पुत्र ने परमेश्वर पिता को वहाँ प्रगट किया है जहाँ परमेश्वर पिता को देखा जा सकता है।*

> *[एक साथ जोड़े गए वचन — कोई भी एक वचन अकेले यह नहीं कहता]*

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यहाँ सावधान और ईमानदार रहें, क्योंकि यहीं वह स्थान है जहाँ व्यक्ति बाइबल में जोड़ना शुरू कर सकता है। जो सीधे तौर पर कहा गया है वह यह है: पुराने नियम का पाठ स्वयं इस भेजे गए व्यक्ति को यहोवा और परमेश्वर कहता है, और जो लोग इस भेजे गए व्यक्ति से मिले वे भी यही कहते हैं। यह भाग कोई निष्कर्ष नहीं है। यह वही है जो वाक्य कहते हैं। जो पदों को जोड़कर प्राप्त किया जाता है वह यह है: कि यह विशेष दृश्य व्यक्ति विशेष रूप से पुत्र है। कोई एक भी पद यह नहीं कहता, "उत्पत्ति 16 में यहोवा का दूत यीशु है।" यह निष्कर्ष यूहन्ना 1:18, यूहन्ना 5:37, और 1 तीमुथियुस 6:16 को पुराने नियम के विवरणों के साथ रखकर और यह पूछकर निकाला जाता है कि किसे देखा जा रहा था। इसीलिए वह चिह्न वहाँ है, और वह चिह्न वहीं रहता है।)*

### B8. और यहोवा-दूत पुराने नियम के बिलकुल अंत में फिर से प्रगट होता है

**मलाकी 3:1** “देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूँढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हाँ वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।” (मत्ती 11:3,10, मर. 1:2, लूका 1:17,76, लूका 7:19,27, यूह. 3:28) **[H4397 malak ⚑]**

**मैं अपना दूत भेजूंगा + वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा → प्रभु अचानक अपने मन्दिर में आएगा, अर्थात वाचा का दूत।**

### भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — दूत की प्रतिज्ञा की गई, और दूत को पहचाना गया

**मरकुस 1:2** जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में लिखा है: “देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा। (मत्ती 11:10, मला. 3:1) (3) जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़कें सीधी करो।” (यशा. 40:3) (4) यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था।

**देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं → प्रभु का मार्ग तैयार करो।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: मलाकी 3:1 एक ही आयत में दो भेजे गए व्यक्तियों का नाम लेता है। एक भेजा गया व्यक्ति मार्ग साफ करने के लिए आगे जाता है। दूसरा भेजा गया व्यक्ति "प्रभु" और "वाचा का दूत" कहलाता है। यह दूसरा भेजा गया व्यक्ति वही है जो प्रभु के अपने मंदिर में आने वाला है। मरकुस मरकुस के सुसमाचार की शुरुआत मलाकी 3:1 की उसी पंक्ति को उद्धृत करते हुए करता है। मरकुस मार्ग साफ करने वाले का नाम यूहन्ना बताता है, जो जंगल में है। इससे दूसरा भेजा गया व्यक्ति मरकुस द्वारा उस बिंदु पर अनाम रह जाता है। पुराना नियम एक ऐसे दूत की प्रतीक्षा में समाप्त होता है जो प्रभु है। नया नियम उसी दूत के चलकर आने के साथ आरम्भ होता है।)*

### ग. एकलौते पुत्र पर रखी गई लकड़ी — पहाड़ पर अब्राहम और इसहाक

**C1. उत्पत्ति 22:2** उसने कहा, “अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।” **[H3173 yachiyd ⚑]**

**अब अपने पुत्र, अपने एकलौते पुत्र इसहाक को ले, जिससे तू प्रेम रखता है → उसे वहाँ होमबलि के रूप में चढ़ा।**

**C2. उत्पत्ति 22:6** तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े। **[H6086 ets ⚑]**

**तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी → और वे दोनों एक साथ चल पड़े.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 22:6 में, पिता लकड़ी नहीं उठाता। इसहाक पहाड़ी पर लकड़ी उठाकर ले जाता है। अब्राहम इसहाक को उसी लकड़ी के ऊपर लिटाएगा। उस लकड़ी के लिए हिब्रू शब्द है ets (H6086)। यह एक जीवित वृक्ष के लिए सामान्य शब्द है, और साथ ही कटी हुई लकड़ी के लिए भी। वही शब्द जीवन के वृक्ष का नाम है, और बाटिका के बीच में स्थित वृक्ष का भी।)*

**C3. उत्पत्ति 22:7** इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा, “हे मेरे पिता,” उसने कहा, “हे मेरे पुत्र, क्या बात है?” उसने कहा, “देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिये भेड़ कहाँ है?” (8) अब्राहम ने कहा, “हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।” और वे दोनों संग-संग आगे चलते गए।

**होमबलि के लिये मेम्ना कहाँ है? → परमेश्वर आप ही अपने लिये मेम्ना जुटाएगा।**

**C4. उत्पत्ति 22:13** तब अब्राहम ने आँखें उठाई, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाकर उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढ़ाया।

**एक मेढ़ा जो अपने सींगों से झाड़ी में फंसा हुआ था → उसे अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि के रूप में चढ़ाया।**

**उत्पत्ति 22:14** अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा, इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है, "यहोवा के पहाड़ पर प्रदान किया जाएगा।"

**यहोवा के पहाड़ पर प्रदान किया जाएगा.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 22:7 में पुत्र के प्रश्न पर फिर से विचार करें: भेड़ का बच्चा कहाँ है? अब्राहम प्रश्न का उत्तर देता है। अब्राहम का उत्तर उससे कहीं आगे तक पहुँचता है जितना वह स्वयं जानता था। अब्राहम कहता है, "परमेश्वर होमबलि के लिये आप ही एक भेड़ का बच्चा जुटाएगा।" यह वाक्यांश दो अर्थ रख सकता है। एक अर्थ यह है कि परमेश्वर अपने उपयोग के लिये एक भेड़ का बच्चा प्राप्त करेगा। दूसरा अर्थ यह है कि परमेश्वर स्वयं को ही भेड़ के बच्चे के रूप में देगा। उस दिन परमेश्वर ने वास्तव में जो दिया वह एक मेढ़ा था, भेड़ का बच्चा नहीं। मेढ़ा एक पूर्ण विकसित नर भेड़ होता है। यह मेढ़ा पुत्र के स्थान पर मरा, जो अपने सींगों से फँसा हुआ था। इसहाक का प्रश्न एक अर्थ में पर्वत पर उत्तरित हो जाता है। इसहाक का प्रश्न दूसरे अर्थ में खुला भी रह जाता है। एक भेड़ का बच्चा अब भी शेष है। अब्राहम उस स्थान का नाम भविष्य काल में एक प्रतिज्ञा के साथ रखता है: "यहोवा के पर्वत पर वह दिखाई देगा।")*

## अलग दृष्टिकोण, एक ही दृश्य — वह पुत्र जिसने लकड़ी उठाई, और वह पुत्र जिसने क्रूस उठाया

**उत्पत्ति 22:6** तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े।

**अब्राहम ने लकड़ी अपने पुत्र इसहाक पर रखी → वे दोनों एक साथ चल पड़े।**

**यूहन्ना 19:17** तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'।

**तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया.**

**यूहन्ना 19:18** वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।

**वहाँ उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया + यीशु बीच में।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: एक पिता, एक इकलौता पुत्र जिसे पिता प्रेम करता है, एक पहाड़ी, पुत्र की अपनी पीठ पर रखी गई लकड़ी, और पुत्र का उस लकड़ी के नीचे चढ़ना। यह दृश्य बाइबल में दो बार घटित हुआ। पहली बार, उत्पत्ति 22 में, परमेश्वर ने छुरी को रोक दिया। परमेश्वर ने पुत्र के स्थान पर एक स्थानापन्न मेढ़ा रख दिया। दूसरी बार, क्रूस पर, किसी ने मृत्यु को नहीं रोका। इस बार, पुत्र स्वयं स्थानापन्न था। दोनों दृश्यों के बीच एक और अंतर पर ध्यान दें। इसहाक ने पूछा, "मेम्ना कहाँ है?" उस दिन इसहाक के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। उत्तर बाद में, यरदन नदी पर, यूहन्ना की ओर से आया। यूहन्ना ने अपनी ओर चलते हुए एक व्यक्ति की ओर इशारा किया।)*

**C5. यूहन्ना 1:29** दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप हरता है। (1 पत. 1:19, यशा. 53:7)

**यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप हरता है। (1 पत. 1:19, यशा. 53:7.**

**C6. उत्पत्ति 22:2** उसने कहा, "अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।"

**यूहन्ना 3:16** "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। **[G3439 monogenes ⚑]**

**जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा → ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे.**

**C7. इब्रानियों 11:17** विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। (उत्प. 22:1-10) (18) और जिससे यह कहा गया था, "इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा," वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। (उत्प. 21:12) (19) क्योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि उसे मरे हुओं में से जिलाए, इस प्रकार उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।

**उसने अपने एकलौते पुत्र को चढ़ाया → यह मानकर कि परमेश्वर उसे मरे हुओं में से भी जिला सकता है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इसहाक के लिए वही यूनानी शब्द उपयोग करता है जो यूहन्ना यीशु के लिए उपयोग करता है। वह शब्द है "एकलौता," मोनोजेनेस (G3439)। इब्रानियों का लेखक हमें बताता है कि पहाड़ पर चढ़ते समय अब्राहम क्या सोच रहा था। अब्राहम सोच रहा था कि परमेश्वर लड़के को मरे हुओं में से जिला सकता है। अब्राहम ने पहाड़ी के नीचे खड़े जवानों से कहा, "मैं और यह लड़का उधर जाकर दण्डवत् करेंगे, और तुम्हारे पास लौट आएंगे।" अब्राहम को आशा थी कि वह इसहाक के साथ पहाड़ से नीचे लौटेगा। इब्रानियों का लेखक कहता है कि अब्राहम को इसहाक "एक दृष्टान्त के रूप में" वापस मिला। यहाँ दृष्टान्त का अर्थ है एक चित्र या प्रतीक। आज्ञा मिलने के तीन दिन बाद, वह पुत्र जो मरे हुए के समान था, जीवित लौट आया।)*

## स्थान के विषय में एक टिप्पणी — एक सहायक टिप्पणी, न कि कोई दावा जो पद सीधे तौर पर करते हैं

**2 इतिहास 3:1** तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह नामक पहाड़ पर उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन पाकर यबूसी ओर्नान के खलिहान में तैयार किया था: (प्रेरि. 7:47)

**तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह नामक पहाड़ पर उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया.**

> *[एक साथ जोड़े गए वचन — कोई भी एक वचन अकेले यह नहीं कहता]*

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: उत्पत्ति 22:2 उस स्थान का नाम बताता है जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम को भेजा था—मोरिय्याह देश। 2 इतिहास 3:1 उस स्थान का नाम बताता है जहाँ सुलैमान ने मंदिर बनाया—यरूशलेम में मोरिय्याह पर्वत। इसहाक के लगभग-बलिदान का पर्वत और बाद के हर मंदिर-बलिदान का पर्वत इस प्रकार एक ही नाम साझा करते हैं। यरूशलेम वही नगर भी है जहाँ सिपाहियों ने यीशु को नगर की शहरपनाह के बाहर क्रूस पर चढ़ाया। केवल वही कहो जो पद कहते हैं। पद यह नहीं कहते कि गोलगोथा वही चट्टान थी जो मोरिय्याह थी। पद यह अवश्य कहते हैं कि नाम एक ही था, पहाड़ियों की श्रृंखला एक ही थी, और नगर एक ही था। अब्राहम के अपने शब्द थे, "यहोवा के पर्वत पर वह देखा जाएगा।" अब्राहम ने ये शब्द भविष्यकाल में कहे थे।)*

## D. दुःख उठानेवाला सेवक — वह अध्याय जो क्रूसों के होने से पहले क्रूस का वर्णन करता है

**D1.** **यशायाह 52:13** देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान और अति महान हो जाएगा। (यिर्म. 23:5) (14) जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी), (भज. 22:6,7, यशा. 53:2,3) (15) वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे; क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी। (रोम. 15:21, 1 कुरि. 2:9)

**उसका रूप ऐसा बिगड़ गया था कि किसी मनुष्य से अधिक → इसी प्रकार वह बहुत सी जातियों पर छिड़काव करेगा।**

**D2.** **यशायाह 53:1** जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? (यूह. 12:38, रोम. 10:16) (2) क्योंकि वह उसके सामने अंकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। (मत्ती 2:23)

**जो समाचार हमें दिया गया? → और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। (मत्ती 2:23.**

**D3.** **यशायाह 53:3** वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान-पहचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हमने उसका मूल्य न जाना। (मर. 9:12)

**वह दुखों का पुरुष था और शोक से परिचित था → वह तुच्छ जाना गया, और हमने उसे कुछ न समझा।**

**D4.** **यशायाह 53:4** निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। (मत्ती 8:17, 1 पत. 2:24) (5) परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। (रोम. 4:25, 1 पत. 2:24)

**वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया + हमारे अधर्म के कारण कुचला गया → उसके कोड़ों से हम चंगे हुए।**

**D5.** **यशायाह 53:6** हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। (प्रेरि. 10:43, 1 पत. 2:25)

**हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे → और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। (प्रेरि. 10:43, 1 पत. 2:25.**

**D6.** **यशायाह 53:7** वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। (यूह. 1:29, मत्ती 27:12,14, मर. 15:4,5, 1 कुरि. 5:7, प्रका. 5:6,12)

**वह मेम्ने के समान वध होने को लाया गया → उसने अपना मुँह नहीं खोला।**

**D7.** **यशायाह 53:8** अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। (प्रेरि. 8:32,33)

**वह जीवतों की भूमि में से काट डाला गया → मेरी प्रजा के अपराध के कारण उस पर मार पड़ी।**

**D8.** **यशायाह 53:9** उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी। (1 कुरि. 15:3, 1 पत. 2:22, 1 यूह. 3:5, यूह. 19:38-42)

**उसने अपनी कब्र दुष्टों के साथ बनाई + अपनी मृत्यु में धनवानों के साथ रहा → उसने कोई उपद्रव नहीं किया था।**

**D9.** **यशायाह 53:10** तो भी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।

**जब वह अपना प्राण दोषबलि करे → तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा.**

**D10.** **यशायाह 53:11** वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा। (रोम. 5:19) (12) इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तो भी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और, अपराधी के लिये विनती करता है। (मत्ती 27:38, मर. 15:27, लूका 22:37, इब्रा. 9:28)

**उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया + वह अपराधियों के साथ गिना गया → उसने बहुतों के पाप को उठाया, और अपराधियों के लिये विनती की।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यशायाह 53:9 पढ़िए और फिर क्रम में यशायाह 53:10 फिर से पढ़िए। पहला कहता है कि सेवक मर चुका था और एक धनी व्यक्ति को कब्र में दफनाया गया था। दूसरा कहता है कि सेवक की आत्मा को पाप-बलि बनाए जाने के बाद, सेवक अपने वंश को देखेगा और अपने दिनों को लंबा करेगा। ये दोनों बातें उस व्यक्ति के लिए सत्य नहीं हो सकतीं जो मरा ही रह जाए। पुनरुत्थान इस यशायाह के अध्याय में लिखा गया है, पुनरुत्थान होने से सात सौ वर्ष पहले।)*

### अलग दृष्टिकोण, एक ही दृश्य — भविष्यवक्ता का पन्ना, और एक रथ में बैठा व्यक्ति उसे ऊँची आवाज़ में पढ़ रहा है

**प्रेरितों के काम 8:32** पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था: "वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला (33) उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा लिया जाता है।" (यशा. 53:7,8) (34) इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, "मैं तुझ से विनती करता हूँ, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में?" (35) तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।

**भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है? → फिलिप्पुस ने उसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यह एक ईमानदार प्रश्न है, जिसे एक ऐसे व्यक्ति ने ज़ोर से पूछा जिसने पहले कभी इसका उत्तर नहीं सुना था। प्रश्न यह है: भविष्यद्वक्ता किसके बारे में बात कर रहा है? उत्तर फिलिप्पुस की निजी राय नहीं है। फिलिप्पुस ने यशायाह 53 की उसी आयत से शुरुआत की। फिलिप्पुस ने उस आयत से यीशु का प्रचार किया। यशायाह 53 के बारे में प्रेरितों की अपनी समझ हमारे लिए लिखी गई है। यशायाह 53 के बारे में प्रेरितों की समझ के विषय में किसी को अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है।)*

### E. इम्मानुएल — परमेश्वर हमारे साथ, बालक जो जन्मा और पुत्र जो दिया गया

**E1. यशायाह 7:14** इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। (मत्ती 1:23, लूका 1:31) **[H6005 Immanuwel ⚑] [H5959 almah ⚑]**

**इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो → एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। (मत्ती 1:23, लूका 1:31.**

**E2. यशायाह 9:6** क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। (यूह. 1:45, इफि. 2:14) **[H6382 pele ⚑]** (7) उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर सम्भाले रहेगा। सेनाओं के और यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा। (लूका 1:32,33, यिर्म. 23:5)

**एक बालक हमारे लिये जन्मा + एक पुत्र हमें दिया गया → उसका नाम पराक्रमी परमेश्वर, सनातन पिता कहलाएगा → उसके राज्य की वृद्धि की कोई सीमा न होगी।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यशायाह 9:6 में दो क्रियाओं के क्रम को देखें। ये दोनों क्रियाएँ एक जैसी नहीं हैं। ये दोनों क्रियाएँ संयोगवश उस क्रम में नहीं हैं। एक बालक जन्मा है। एक पुत्र दिया गया है। जन्मना यह वर्णन करता है कि बालक संसार में कैसे आया। दिया जाना यह वर्णन करता है कि पहले से विद्यमान पुत्र के साथ क्या हुआ। अब इस बालक को दिए गए नामों पर विचार करें। यशायाह 9:6 यह नहीं कहता कि बालक पराक्रमी परमेश्वर के समान होगा। यशायाह 9:6 कहता है, "उसका नाम पराक्रमी परमेश्वर पुकारा जाएगा।" सूची का पहला नाम, अद्भुत, पेले (H6382) है। पेले उसी मूल से जुड़ा है जो न्यायियों 13 में मानोह को मिले उत्तर से है, जब उसने एक नाम माँगा और उसे नहीं पा सका। यशायाह 9:6 में, वह नाम दिया गया है।)*

**E3. यशायाह 9:2** जो लोग अंधियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अंधकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी। (मत्ती 4:15,16, लूका 1:79)

**जो लोग अंधियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा.**

**E4. मीका 5:2** हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तो भी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादिकाल से होता आया है। (मत्ती 2:6, यूह. 7:42)

**तुझ में से वह उत्पन्न होगा जो इस्राएल में हाकिम होगा → जिसका निर्गमन प्राचीनकाल से, वरन अनादिकाल से होता आया है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: मीका 5:2 का एक वाक्य इस पूरे अध्ययन के दोनों छोर थामे हुए है। यह शासक एक छोटे नगर में से निकलता है। एक छोटे नगर में से निकलना एक आरंभ है, ऐसे स्थान पर जहाँ कोई व्यक्ति चलकर पहुँच सकता है। इस शासक के निकलने प्राचीन काल से, अनादि काल से हैं। अनादि काल से निकलना कोई आरंभ ही नहीं है। मीका दोनों सत्यों को एक ही वाक्य में बताता है। मीका इनमें से किसी भी सत्य को नरम नहीं करता।)*

### च. स्त्री का वंश और कुंवारी — पहली प्रतिज्ञा और उसकी पूर्ति

**F1. उत्पत्ति 3:15** और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

**तेरे वंश और उसके वंश के बीच → वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी कली को कुचलेगा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:15 सर्प से उस समय कहा था जब पाप संसार में प्रवेश कर रहा था। उत्पत्ति 3:15 पूरी बाइबल में एक उद्धारकर्ता की पहली प्रतिज्ञा है। ध्यान दें कि इस पद में किसका वंश नामित किया गया है। शेष पवित्रशास्त्र में, वंशावली पुरुषों के माध्यम से खोजी जाती है। उदाहरण के लिए अब्राहम का वंश और दाऊद का वंश। यहाँ, केवल एक बार, बिल्कुल आरंभ में, जो वंश नामित किया गया है वह स्त्री का वंश है। इस पद में दो घावों पर भी ध्यान दें, जो एक समान आकार के नहीं हैं। स्त्री के वंश की एड़ी कुचली जाएगी। सर्प का सिर कुचला जाएगा।)*

**F2. गलातियों 4:4** परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ। (5) ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले।

**तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा → ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: गलातियों 4:4 कहता है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। गलातियों 4:4 फिर कहता है कि पुत्र स्त्री से जन्मा। भेजे जाने का उल्लेख वाक्य में पहले किया गया है। जन्म का उल्लेख वाक्य में दूसरे स्थान पर किया गया है। यह क्रम महत्व रखता है। किसी व्यक्ति को किसी स्थान से भेजा नहीं जा सकता जब तक कि वह व्यक्ति पहले से ही उस स्थान में अस्तित्व में न रहा हो।)*

## भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — प्रतिज्ञा किया गया चिन्ह, और दिया गया चिन्ह

**यशायाह 7:14** इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। (मत्ती 1:23, लूका 1:31)

**एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। (मत्ती 1:23, लूका 1:31.**

**मत्ती 1:18** अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने के पहले से वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। (19) अतः उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। (20) जब वह इन बातों की सोच ही में था तो परमेश्वर का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, "हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। (21) वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" (22) यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो (यशा. 7:14) (23) "देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा," जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ।

**तू उसका नाम यीशु रखना: क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा → वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे, जिसका अर्थ है, परमेश्वर हमारे साथ।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: दोनों वृत्तांतों के बीच का अंतर ही शिक्षा है। यशायाह 7:14 कहता है कि वह बालक का नाम इम्मानुएल रखेगी। मत्ती 1:23 कहता है कि वे बालक का नाम इम्मानुएल रखेंगे। यशायाह के वृत्तांत में एक माँ अपने बच्चे का नाम रखती है। मत्ती के वृत्तांत में सब लोग यीशु का नाम रखते हैं। मत्ती एक और काम भी करता है जिसे किसी पाठक को अनुमान नहीं लगाना पड़ता। मत्ती रुककर, मत्ती के सुसमाचार के पाठ के भीतर ही, पाठक के लिए उस नाम का अनुवाद करता है। किसी भी सदी का कोई पाठक इम्मानुएल नाम का अर्थ चूक नहीं सकता। इम्मानुएल का अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ। मत्ती यह भी नहीं कहता कि यीशु के जन्म ने मत्ती को केवल यशायाह की भविष्यवाणी की याद दिलाई। मत्ती कहता है कि यह सब इसलिए किया गया ताकि यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हो सके।)*

**F3. लूका 1:31** और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। (यशा. 7:14) (32) वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। (भज. 132:11, यशा. 9:6-7) (33) और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।" (2 शमू. 7:12,16, इब्रा. 1:8, दानि. 2:44) (34) मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।" (35) स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।

**यह कैसे होगा, जब मैं पुरूष को जानती ही नहीं? → वह पवित्र जो तुझ से उत्पन्न होनेवाला है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: लूका 1:34 में मरियम का प्रश्न एक समझदारी भरा प्रश्न है, और लोग आज भी यही प्रश्न पूछते हैं। उसे दिया गया उत्तर कोई तर्क नहीं है। यह उसकी घोषणा है जो परमेश्वर करने जा रहा है। लूका 1:32 में जिस सिंहासन का नाम लिया गया है, उस पर ध्यान दें: "उसके पिता दाऊद का सिंहासन।" यह वही सिंहासन है जिस पर यशायाह 9:7 ने कहा था कि वह बालक बैठेगा, और यह वही राजघराना है जिसके विषय में भजन संहिता 110 लिखा गया था।)*

## G. वचन देहधारी हुआ — और एक व्यक्ति वास्तव में उसे कैसे पाता है

**G1. यूहन्ना 1:1** आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। **[G3056 logos ⚑]** (2) यही आदि में परमेश्वर के साथ था। (3) सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। (4) उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

**आदि में वचन था + वचन परमेश्वर के साथ था + वचन परमेश्वर था → सब वस्तुएं उसी के द्वारा बनाई गईं।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यूहन्ना 1:1 एक ही पंक्ति में तीन कथन देता है। तीनों कथनों में से हर एक आवश्यक है। पहला कथन है "वचन आदि में था।" वचन, मानव शरीर धारण करने से पहले परमेश्वर के पुत्र के लिए एक उपाधि, का कोई आरंभ बिंदु नहीं था। दूसरा कथन है "वचन परमेश्वर के साथ था।" वचन केवल परमेश्वर पिता का एक और नाम नहीं है, क्योंकि कोई व्यक्ति स्वयं के साथ नहीं हो सकता। तीसरा कथन है "वचन परमेश्वर था।" वचन परमेश्वर के बराबर खड़ा कोई निम्न प्राणी नहीं है। इन तीनों में से किसी एक कथन को हटा देने से एक ऐसा वाक्य बनता है जो यूहन्ना द्वारा लिखे गए वाक्य से भिन्न है।)*

**G2. यूहन्ना 1:14** और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (1 यूह. 4:9) **[G4637 skenoo ⚑]**

**वचन देहधारी हुआ + हमारे बीच में डेरा किया → हम ने उसकी महिमा ऐसी देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।**

## भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — जंगल में तंबू, और शरीर का तंबू

**निर्गमन 25:8** और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएँ, कि मैं उनके बीच निवास करूँ ।

**और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएँ → कि मैं उनके बीच निवास करूँ.**

**यूहन्ना 1:14** और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (1 यूह. 4:9)

**वचन देहधारी हुआ + हमारे बीच में रहा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यूहन्ना 1:14 में "वास किया" के लिए यूहन्ना जिस यूनानी शब्द का प्रयोग करता है, वह है स्केनू (G4637)। स्केनू का अर्थ है तंबू गाड़ना और उस तंबू में रहना। प्राचीन समय में, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से कहा कि वे एक तंबू बनाएं ताकि परमेश्वर उनके बीच रह सके, और उन्होंने उसे खालों, लकड़ी और सोने से बनाया (निर्गमन 25:8)। यूहन्ना 1:14 में, वही चित्र फिर से आता है, परन्तु यह तंबू एक मानव शरीर है। जंगल में वह तंबू उस सत्य का एक प्रारंभिक चित्र था जिसे यूहन्ना वर्णन करता है, जो आगे यीशु मसीह की देह की ओर संकेत करता है। नया नियम उस तंबू को एक छाया के रूप में पहचानता है, एक चित्र जो यीशु मसीह की ओर संकेत करता है, परन्तु यह केवल तब बताता है जब वह प्रकट कर देता है कि वह छाया किस ओर संकेत कर रही थी। यूहन्ना इसे यूहन्ना 1:14 में स्पष्ट रूप से बताता है।)*

**G3. कुलुस्सियों 1:15** पुत्र तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। (16) क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (17) और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। (प्रका. 1:8)

**उसी में सब वस्तुएं सृजी गईं + वह सब वस्तुओं से पहले है → उसी में सब वस्तुएं स्थिर रहती हैं।**

**G4. कुलुस्सियों 2:9** क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। (10) और तुम मसीह में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।

**उसी में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता शरीर रूप में वास करती है → तुम उसी में परिपूर्ण हो।**

## G5. आप उसे कैसे पाएं — उसने हमें बताया कि कहाँ देखना है

**यूहन्ना 5:39** तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है; (40) फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।

**तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो → और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यूहन्ना 5:39-40 में यीशु ने यह उन लोगों से कहा जो उस समय जीवित किसी भी व्यक्ति से बढ़कर पवित्रशास्त्र को जानते थे। वे उन्हें कंठस्थ सुना सकते थे। यीशु ने उन्हें बताया कि पवित्रशास्त्र का जो सम्पूर्ण भाग उन्होंने याद कर रखा था, वह सारा उसी की ओर इशारा कर रहा था, और फिर भी वे जीवन पाने के लिए उसके पास आने को तैयार नहीं थे। पवित्रशास्त्र के शब्दों को जानना उस व्यक्ति को जानने के समान नहीं है जिसके विषय में वे शब्द कहे गए हैं। जीवन को खोजने के लिए और कोई स्थान नहीं है। यीशु ने यह नहीं कहा कि अपनी भावनाओं को खोजो। उसने कहा, पवित्रशास्त्र को खोजो।)*

**G6. लूका 24:25** तब उसने उनसे कहा, “हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों! (26) क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुःख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?” (27) तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया। (यूह. 1:45, लूका 24:44, व्यव. 18:15)

**मूसा से और सारे भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके → उसने सारे पवित्रशास्त्र में अपने विषय की बातें समझाईं।**

**G7. लूका 24:32** उन्होंने आपस में कहा, “जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्रशास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?”

**क्या मार्ग में, जब उस ने हमारे लिये पवित्रशास्त्र खोला, हमारा मन हमारे भीतर जल नहीं रहा था?**

**G8. लूका 24:44** फिर उसने उनसे कहा, “ये मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।” (45) तब उसने पवित्रशास्त्र समझने के लिये उनकी समझ खोल दी।

**जो कुछ मूसा की व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं, और भजनसंहिता में मेरे विषय में लिखा है, उसका पूरा होना अवश्य है → तब उस ने उनकी समझ खोल दी।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: लूका 24:44-45 उस प्रश्न का उत्तर देता है जो यह पूरा अध्ययन पूछ रहा है। यह उत्तर यीशु के मुख से आता है, यीशु के कब्र से जी उठने के बाद। यीशु ने पुराने नियम के तीन भागों का नाम लिया: मूसा की व्यवस्था, भविष्यवक्ता, और भजन। ये तीन भाग मिलकर पूरा पुराना नियम बनाते हैं। यीशु ने कहा कि पूरे पुराने नियम में उसके बारे में बातें थीं। यीशु ने यह नहीं कहा कि केवल पुराने नियम के कुछ भाग में ही उसके बारे में बातें थीं। इसके बाद यीशु ने चेलों के लिए दो अलग-अलग काम किए। यीशु ने चेलों के लिए पवित्रशास्त्र खोले। यीशु ने चेलों की समझ खोली। एक व्यक्ति को इन दोनों चीज़ों की आवश्यकता होती है। एक व्यक्ति पूरी बाइबल अपने हाथों में रख सकता है और फिर भी उसे यीशु की आवश्यकता होती है कि वह उसकी आँखें खोले ताकि वह बाइबल में यीशु को देख सके। बाइबल पढ़ो। यीशु से माँगो कि वह बाइबल को तुम्हारे लिए खोले। बाइबल पढ़ते रहो।)*

**G9. 1 यूहन्ना 1:1** उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन् जिसे हमने ध्यान से देखा और हाथों से छुआ। (2) (यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं जो पिता के साथ था और हम पर प्रगट हुआ)। (3) जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।

**सुना + अपनी आँखों से देखा + ध्यान से देखा + अपने हाथों से छुआ → उस अनन्त जीवन को, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यूहन्ना जानबूझकर 1 यूहन्ना 1:1 में इंद्रियों को सूचीबद्ध करता है: सुना, देखा, ध्यान से निहारा, और अपने हाथों से छुआ। यूहन्ना किसी भावना या विचार का वर्णन नहीं कर रहा है। यूहन्ना उस व्यक्ति का वर्णन कर रहा है जिसके साथ उसने भोजन किया था। उसी वाक्य में, यूहन्ना उस व्यक्ति को "वह अनन्त जीवन, जो पिता के*

*साथ था" कहता है। जिस व्यक्ति को प्रेरितों ने अपने हाथों से छुआ, वही व्यक्ति है जो आदि से पहले पिता के साथ था। यही 1 यूहन्ना 1:1-3 का संपूर्ण दावा है। यूहन्ना कहता है कि वह इस दावे का गवाह है, इस दावे के बारे में सिद्धांतवादी नहीं है।)*

## H. मृत्यु ऐसी क्यों होनी थी — परमेश्वर के पास वापस जाने का पुल

### H1. समस्या, स्पष्ट रूप से बताई गई

**यशायाह 59:2** परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।

**परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है.**

**रोमियों 3:23** इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं

**इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं.**

### H2. रक्त ही क्यों, कोई आसान वस्तु क्यों नहीं

**इब्रानियों 9:22** और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती। (लैव्य. 17:11)
**[G859 aphesis ⚑]**

**और बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती। (लैव्य. 17:11.**

**लैव्यव्यवस्था 17:11** क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैंने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित किया जाए; क्योंकि प्राण के लिए लहू ही से प्रायश्चित होता है। (इब्रा. 9:22)

**क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है → क्योंकि प्राण के लिए लहू ही से प्रायश्चित होता है। (इब्रा. 9:22.**

**इब्रानियों 10:4** क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे ।

**क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: इन तीन पदों को एक साथ रखिए और सारी प्राचीन बलिदान व्यवस्था स्वयं ही स्पष्ट हो जाती है। जीवन रक्त में है। पाप की कीमत एक जीवन है। प्राचीन समय में, पशु बलिदान प्रायश्चित प्रदान करते थे (पाप के लिए एक अस्थायी आवरण जो परमेश्वर के सामने व्यक्ति की स्थिति को पुनर्स्थापित करता था) दिन-प्रतिदिन, सैकड़ों वर्षों तक। इब्रानियों स्पष्ट रूप से कहता है कि पशु बलिदान पाप को कभी दूर नहीं कर सकते थे। तो फिर वे सारे बलिदान किसलिए थे? उन्होंने पाप के ऋण को दृश्य रूप से अदत्त रखा। वे एक लंबा, बारंबार, दैनिक स्मरण थे कि एक जीवन देना बाकी है, और उन्होंने उस स्मरण को तब तक बनाए रखा जब तक वह एक मृत्यु न आई जो पाप के ऋण को पूरी तरह चुका सके।)*

### H3. वह कितना नीचे उतरा

**फिलिप्पियों 2:5** जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; (6) जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। (7) वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। (8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

**वह परमेश्वर के स्वरूप में था → उसने दास का रूप धारण किया → और मृत्यु तक, वरन क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: फिलिप्पियों 2:6-8 में अवतरण के क्रम को देखें। यीशु परमेश्वर के स्वरूप में था। यीशु को ख्याति से रहित किया गया। यीशु ने सेवक का रूप धारण किया। यीशु ने मनुष्यों की समानता धारण की। यीशु नम्र बना। यीशु आज्ञाकारी बना। यीशु मरा। इसके बाद पौलुस ने दो और शब्द जोड़े जिनकी वाक्य को कठोरता से आवश्यकता नहीं थी: "यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु।" केवल यह कहना कि यीशु मरा, पौलुस के लिए पर्याप्त नहीं था। यीशु की मृत्यु का विशिष्ट ढंग पौलुस के तर्क का एक भाग है।)*

### H4. इसकी वास्तव में उसे क्या कीमत चुकानी पड़ी — पहले से कहा गया, और बाद में फिर कहा गया

**यशायाह 50:6** मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया। (मत्ती 26:67, इब्रा. 12:2)

**मैंने अपनी पीठ मारने वालों को दी → मैंने अपना मुख लज्जा और थूकने से न छिपाया।**

**भजन संहिता 22:16** क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। (मत्ती 27:35, मर. 15:29, लूका 23:33) (17) मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ; वे मुझे देखते और निहारते हैं; (18) वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं। (मत्ती 27:35, लूका 23:34, यहू. 19:24,25)

**उन्होंने मेरे हाथ और मेरे पांव छेदे हैं → वे मेरे वस्त्र आपस में बांट लेते हैं, और मेरे वस्त्र के लिये चिट्ठी डालते हैं।**

**मत्ती 27:35** तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए।

**उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और चिट्ठी डालकर उसके वस्त्र बांट लिए → कि पूरा हो।**

**यूहन्ना 19:34** परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।

**एक भाले ने उसका पंजर बेधा → और तुरन्त लोहू और जल बह निकला।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: दाऊद ने भजन संहिता 22 में छिदे हुए हाथों और पैरों के बारे में लिखा। दाऊद ने भजन संहिता 22 में सिपाहियों द्वारा वस्त्र बाँटे जाने के बारे में लिखा। दाऊद ने यह इस्राएल में किसी के भी क्रूसीकरण देखने से एक हज़ार वर्ष पहले लिखा। दाऊद अपने साथ व्यक्तिगत रूप से घटी किसी घटना का वर्णन नहीं कर रहा था। मत्ती ने सदियों बाद, यीशु के क्रूसीकरण के घटित होने के पश्चात लिखा। मत्ती ने लिखा कि सिपाहियों ने ठीक वही किया जो भजन संहिता 22 में वर्णित था। मत्ती बताता है कि सिपाहियों ने ऐसा क्यों किया: "कि यह पूरा हो।" इन दोनों वृत्तांतों को साथ पढ़ें। दाऊद ने अपना वृत्तांत भविष्य की ओर देखते हुए लिखा, बिना यह जाने कि क्रूसीकरण घटित होगा। मत्ती ने अपना वृत्तांत क्रूसीकरण की ओर पीछे मुड़कर देखते हुए लिखा, बिना यह नकारे कि क्रूसीकरण घटित हुआ।)*

## H5. मृत्यु किसलिए थी — एक सेतु, दुर्घटना नहीं

**रोमियों 5:8** परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।
**[G2644 katallasso ⚑]** (9) तो जबकि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? (10) क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?

**जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा → हम उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से मेल किए गए।**

**2 कुरिन्थियों 5:18** और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। **[G2643 katallage ⚑]** (19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। (20) इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। (इफि. 6:10, मला. 2:7) (21) जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

**परमेश्वर मसीह में होकर जगत का अपने साथ मेल कर रहा था → उसने उसे जो पाप से अनजान था, हमारे लिये पाप बनाया।**

**1 तीमुथियुस 2:5** क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है (6) जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए।

**एक परमेश्वर + परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक मध्यस्थ, अर्थात् मनुष्य मसीह यीशु।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: एक मध्यस्थ (वह जो दो अलग हुए पक्षों के बीच खड़ा होकर उन्हें फिर से एक साथ लाता है) दोनों पक्षों से पूरी तरह संबंधित होना चाहिए, अन्यथा वह मध्यस्थ के रूप में सेवा नहीं कर सकता। देखिए 1 तीमुथियुस 2:5 मध्यस्थ के बारे में क्या कहता है: "मनुष्य मसीह यीशु।" उसे मनुष्य होना ही चाहिए, अन्यथा वह वहाँ नहीं खड़ा हो सकता जहाँ मनुष्य खड़े होते हैं और मानवीय मृत्यु नहीं मर सकता। अब देखिए 2 कुरिन्थियों 5:19 उस मृत्यु के भीतर क्या सत्य था, यह क्या कहता है: "परमेश्वर मसीह में था।" और उसे परमेश्वर होना ही चाहिए, अन्यथा उसकी मृत्यु बस एक और मनुष्य का मरना होगी, जो किसी के लिए भी उद्धार (पाप और पाप के दंड से बचाव) प्रदान नहीं करेगी। यही कारण है कि "यीशु कौन है" का उत्तर केवल विद्वानों के लिए एक गौण प्रश्न नहीं है। उद्धार का पूरा सिद्धांत इसी पर निर्भर करता है।)*

## H6. खम्भे पर साँप — एक पुरानी तस्वीर जिसे उसने अपने ऊपर लागू किया

**गिनती 21:8** यहोवा ने मूसा से कहा, “एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।” (9) अतः मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुओं में से जिस-जिसने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया। (यूह. 3:14)

**जो कोई डसा गया हो, जब वह उसे देखे, तब वह जीवित रहेगा।**

## भिन्न दृष्टिकोण, वही दृश्य — मरुभूमि में खम्भा, और पहाड़ी पर क्रूस

**यूहन्ना 3:14** और जिस तरह से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। (यूह. 8:28) (15) ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। (16) “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (17) परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

**जैसे मूसा ने जंगल में सर्प को ऊंचा किया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊंचा किया जाना अवश्य है → जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: गिनती अध्याय 21 और यूहन्ना अध्याय 3 के बीच यह संबंध इस अध्ययन द्वारा गढ़ा हुआ नहीं है। यीशु ने स्वयं अपनी पहचान के बारे में इस संबंध को सीधे और स्पष्ट रूप से बताया। जंगल में मरते हुए लोगों से यह नहीं कहा गया था कि वे स्वयं को ठीक करें, साहसी बनें, या इलाज अर्जित करें। उनसे कहा गया था कि वे उस वस्तु की ओर देखें जिसे परमेश्वर ने खंभे पर ऊंचा किया था। जिन्होंने देखा, वे जीवित रहे। अब इन दोनों दृश्यों को एक साथ रखें और उस अजीब भाग पर ध्यान दें। खंभे पर ऊंचा किया गया कांसे का सांप उसी वस्तु के आकार का था जो उन लोगों को मार रही थी जो उसकी ओर देखते थे। पौलुस क्रूस के बारे में इसी तरह की एक अजीब सच्चाई बताता है, यह कहते हुए कि यीशु को हमारे लिए पाप बनाया गया, यद्यपि वह पाप को नहीं जानता था (2 कुरिन्थियों 5:21)। इलाज को उसी आकार में ऊंचा किया गया जिस आकार में श्राप था।)*

## I. पिता स्वयं पुत्र को "परमेश्वर" और "प्रभु" कहते हैं

**I1. इब्रानियों 1:1** पूर्व युग में परमेश्वर ने पूर्वजों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की (2) पर इन अन्तिम दिनों में हम से अपने पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि भी रची है। (1 कुरि. 8:6, यूह. 1:3) (3)

वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भालता है: वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा।

**उसने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बात की + जिसके द्वारा उसने संसार भी बनाए → जो उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है।**

**I2. इब्रानियों 1:5** क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, "तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है?" और फिर यह, "मैं उसका पिता होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा?" (2 शमू. 7:14, 1 इति. 17:13, भज. 2:7) **[G4416 prototokos ⚑]** (6) और जब पहलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, "परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।" (व्यव. 32:43, 1 पत. 3:22)

**क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, "तू मेरा पुत्र है? → व्यव. 32:43, 1 पत. 3:22.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: इब्रानियों की पुस्तक का पूरा पहला अध्याय एक ही लंबा तर्क प्रस्तुत करता है। यह तर्क यह है कि पुत्र कोई स्वर्गदूत नहीं है और कभी स्वर्गदूत नहीं था। यह बात एक ऐसे अध्ययन में ध्यान देने योग्य है जिसने अभी-अभी "यहोवा के दूत" नामक व्यक्ति पर कई पृष्ठ व्यतीत किए हैं। इब्रानी शब्द मलाक एक कार्य को दर्शाता है। परमेश्वर के अपने पुत्र ने पुराने नियम में कई अवसरों पर वह कार्य पूरा किया। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक का लेखक किसी को भी पुत्र को सृजित स्वर्गदूतों में गिनने नहीं देगा। स्वर्गदूतों को पुत्र की आराधना करने के लिए कहा गया है।)*

**I3. इब्रानियों 1:8** परन्तु पुत्र के विषय में कहता है, "हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा, तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। (9) तूने धार्मिकता से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण परमेश्वर, तेरे परमेश्वर, ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तेरा अभिषेक किया।" (भज. 45:7) (10) और यह कि, "हे प्रभु, आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। (भज. 102:25, उत्प. 1:1) (11) वे तो नाश हो जाएँगे; परन्तु तू बना रहेगा और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे। (12) और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएँगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।" (इब्रा. 13:8, भज. 102:25,26)

**पुत्र से वह कहता है, हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग है → हे प्रभु, तूने आदि में पृथ्वी की नींव डाली।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: इब्रानियों 1:8 के पहले पाँच शब्दों को फिर से पढ़ें: "परन्तु पुत्र के विषय में वह कहता है।" यह इब्रानियों की पुस्तक के लेखक की यीशु के बारे में राय नहीं है। यह परमेश्वर पिता को पुत्र से सीधे बात करते हुए दर्ज करता है। पिता पुत्र को "हे परमेश्वर" कहकर पुकारता है, फिर पुत्र को "प्रभु" कहता है, फिर पृथ्वी और आकाशों को बनाने का श्रेय पुत्र को देता है। यदि कोई व्यक्ति यह तर्क देना चाहे कि पुत्र को पवित्रशास्त्र में कभी परमेश्वर नहीं कहा गया है, तो उस व्यक्ति को इस पद का सामना करना होगा, जहाँ पिता पुत्र को परमेश्वर कहता है।)*

## अलग दृष्टिकोण, एक ही दृश्य — एक राजा के लिए लिखा गया गीत, और पिता का अपने पुत्र को उसका हवाला देना

**भजन संहिता 45:6** हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा; तेरा राजदण्ड न्याय का है। (7) तूने धार्मिकता से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हाँ, तेरे परमेश्वर ने तुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। (इब्रा. 1:8,9)

**हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा → तेरे परमेश्वर ने तुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। (इब्रा. 1:8,9.**

**भजन संहिता 102:25** आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। (26) वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह मिट जाएगा; (27) परन्तु तू वहीं है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।

**आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली → परन्तु तू वहीं है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यह एक ऐसा स्थान है जहाँ दो अंशों को साथ-साथ पढ़ना वास्तव में काम करता है। भजन संहिता 45 एक विवाह गीत है। भजन संहिता 102 एक संकट में पड़े व्यक्ति की प्रार्थना है। भजन संहिता 102 में, ये शब्द यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, जिसने संसार को बनाया, को संबोधित किए गए हैं। दोनों भजन बेतलेहेम में यीशु के जन्म से सदियों पहले लिखे गए थे। इब्रानियों 1 दोनों भजनों को उद्धृत करता है। इब्रानियों 1 दोनों भजनों को परमेश्वर पिता के वचनों के रूप में प्रस्तुत करता है। इब्रानियों 1 दोनों भजनों को पुत्र पर लागू करता है। मूल भजनों और इब्रानियों 1 में दिए गए उद्धरणों के बीच शब्दों में छोटे-छोटे अंतरों पर ध्यान दें। बाइबल इन छोटे अंतरों को नहीं छिपाती, और यह अध्ययन भी उन्हें नहीं छिपाता। भजनों और इब्रानियों 1 के बीच जो नहीं बदलता, वह है उस व्यक्ति की पहचान जिसके बारे में ये शब्द कहे गए हैं।)*

## J. यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा — वह वचन जिसने तर्क को समाप्त कर दिया

**J1. भजन संहिता 110:1** मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, "तू मेरे दाहिने ओर बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।" (इब्रा. 10:12,13, लूका 20:42,43) **[H113 adown ⚑] [H3068 Yehovah ⚑]** (2) तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।

**यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, तू मेरे दाहिने हाथ बैठ → जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पावदान न बना दूँ।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: भजन संहिता 110:1 की यह एक पंक्ति पहली नज़र में जितना अर्थ दिखाती है, उससे कहीं अधिक अर्थ रखती है। अंग्रेज़ी में, दोनों शब्द "Lord" के रूप में छापे गए हैं। अंतर की एकमात्र कुंजी अक्षरों का बड़ा होना है। पहला शब्द बड़े अक्षरों में छापा गया है, LORD। दूसरा शब्द बड़े अक्षरों में नहीं छापा गया है। अंग्रेज़ी के नीचे, ये दो अलग-अलग हिब्रू शब्द हैं। पहला हिब्रू शब्द परमेश्वर का वाचा-नाम है, यहोवा (H3068)। KJV में बड़े अक्षरों का अर्थ हमेशा यह होता है कि मूल हिब्रू शब्द यहोवा है। दूसरा हिब्रू शब्द है अदोन (H113), जो स्वामी या शासक के लिए एक शब्द है। यहाँ प्रयुक्त अदोन का रूप "मेरे प्रभु" पढ़ा जाता है। यह भजन लिखते हुए दाऊद यह अभिलेख करता है कि परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा है जिसे दाऊद अपना स्वयं का स्वामी कहता है। अब इस सीधे प्रश्न पर विचार करें। दाऊद इस्राएल का राजा था। उसका स्वामी कौन था? यह उत्तर और भी अजीब हो जाता है जब आप याद करते हैं कि परमेश्वर ने वादा किया था कि मसीह पीढ़ियों बाद दाऊद के अपने ही परिवार में से आएगा। कोई व्यक्ति सामान्यतः अपने ही परपोते को "मेरे प्रभु" नहीं कहता।)*

## J2. उसने स्वयं उनसे इसके बारे में पूछा, और कोई भी उत्तर न दे सका

**मत्ती 22:41** जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उनसे पूछा (42) “मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किसकी सन्तान है?” उन्होंने उससे कहा, “दाऊद की।” (43) उसने उनसे पूछा, “तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? (44) ‘प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ।’ (45) भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?” (46) उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका। परन्तु उस दिन से किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ।

**यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे है? → और कोई भी उसे एक शब्द का उत्तर न दे सका।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: यीशु ने फरीसियों को अपने ही प्रश्न का उत्तर मत्ती 22:41-46 में नहीं बताया। उसने यह प्रश्न पूछा और उसे अनुत्तरित छोड़ दिया। यह आज भी अनुत्तरित है, और फिर भी इसका केवल एक ही उत्तर है जो उपयुक्त बैठता है। मसीह देह के अनुसार दाऊद का पुत्र है, और दाऊद के जन्म से पहले वह जो था, उसके अनुसार दाऊद का प्रभु है।)*

## J3. पतरस ने उसी वचन को उस दिन इस्तेमाल किया जिस दिन कलीसिया का आरंभ हुआ

**प्रेरितों के काम 2:32** “इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। (33) इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। (34) क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है, ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ (35) जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।’” (भज. 110:1) (36) “अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।”

**दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ा → परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु और मसीह दोनों बनाया है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: प्रेरितों के काम 2:29-36 में पतरस का तर्क छोटा है। पतरस के तर्क को किसी चतुराई की आवश्यकता नहीं है। दाऊद ने किसी के परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठने के विषय में लिखा। दाऊद कभी ऊपर जाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ नहीं बैठा। एक व्यक्ति जाकर दाऊद की कब्र देख सकता है, पतरस कुछ आयतों पहले यह कहता है। इस कारण वह भजन दाऊद के विषय में नहीं था। पतरस फिर उस व्यक्ति का नाम बताता है जिसके विषय में वह भजन था। पतरस इस व्यक्ति का नाम बिना किसी नरमी के लेता है: "उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया।" पतरस इस व्यक्ति को "प्रभु और मसीह दोनों" कहता है।)*

## ज4. वही भजन एक बात और कहता है — और इब्रानियों उस पर पूरा तर्क खड़ा करता है

**भजन संहिता 110:4** यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, “तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है ।” (इब्रा. 7:21, इब्रा. 7:17)

**यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा → तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है ।” (इब्रा. 7:21, इब्रा. 7:17.**

**इब्रानियों 5:5** वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की महिमा अपने आप से नहीं ली, पर उसको उसी ने दी, जिसने उससे कहा था, “तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।” (भज. 2:7) (6) इसी प्रकार वह दूसरी जगह में भी कहता है, “तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है।”

**वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की महिमा अपने आप से नहीं ली → तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है.**

**इब्रानियों 7:3** जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरकर वह सदा के लिए याजक बना रहता है।

**न दिनों का आरंभ, न जीवन का अंत → निरंतर याजक बना रहता है।**

**इब्रानियों 7:24** पर यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजकपद अटल है। (25) इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है। (1 यूह. 2:1,2, 1 तीमु. 2:5)

**वह सदा बना रहता है + उसके पास एक अटल याजकपद है → वह उन्हें सम्पूर्ण रूप से बचाने में सक्षम है।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: एक छोटे भजन में बहुत कुछ समाया हुआ है। भजन 110 किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेता है जिसे दाऊद अपना प्रभु कहता है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। भजन 110 सिय्योन से राज्य करने वाले एक राजा का नाम लेता है। भजन 110 सदा के लिए एक याजक का नाम लेता है, जो इस्राएल के याजकपद से भी पुरानी एक व्यवस्था का है, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने शपथ खाकर की है, जिसे परमेश्वर वापस नहीं लेगा। प्राचीन इस्राएल में, व्यवस्था राजा के पद और याजक के पद को अलग-अलग रखती थी। उस व्यवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति को दोनों पद रखने की अनुमति नहीं थी। भजन 110 दोनों पद एक ही व्यक्ति को देता है। इब्रानियों की पुस्तक कई अध्याय इस बात को समझाने में लगाती है कि वह व्यक्ति कौन है।)*

## K. कब्र से जी उठाया गया — और तुझ में जीवित

## K1. स्वयं तथ्य, और यह कैसे सौंपा गया

**1 कुरिन्थियों 15:3** इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी, कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया । (4) और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (होशे 6:2)

**मसीह हमारे पापों के लिये पवित्रशास्त्र के अनुसार मरा + वह गाड़ा गया + तीसरे दिन जी उठा।**

**1 कुरिन्थियों 15:20** परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें पहला फल हुआ।

**मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें पहला फल बना है।**

## K2. पुनरुत्थान ने उसके बारे में क्या सिद्ध किया

**रोमियों 1:3** अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। (4) और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।

**शरीर के भाव से दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ → मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहराया गया।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: पौलुस रोमियों 1:3-4 में फिर से उत्तर के दोनों भागों को क्रम में एक ही वाक्य में रखता है। यीशु शरीर के अनुसार दाऊद के घराने से आया। यीशु मरे हुओं में से जी उठकर सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र होने का दावा कर सकता है। केवल यीशु का ही यह दावा मरे हुओं में से जी उठकर सिद्ध हुआ है।)*

## K3. पुराने नियम ने इसे पहले कहा

**भजन संहिता 16:10** क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को कब्र में सड़ने देगा। (11) तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है। (प्रेरि. 2:25-28)

**तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा → और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।**

**प्रेरितों के काम 2:29** "हे भाइयों, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ वर्तमान है। (1 राजा. 2:10) (30) वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाई है, मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा। (2 शमू. 7:12,13, भज. 132:11) (31) उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की, कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई। (भज. 16:10)

**दाऊद मर भी गया और गाड़ा भी गया → उसने यह पहिले से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में कहा।**

## K4. और अब — वह उन लोगों में जीवित है जिन्हें उसने बचाया

**रोमियों 8:11** और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

**जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, उसका आत्मा तुम में वास करे → वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी जीवित करेगा।**

**गलातियों 2:20** मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आपको दे दिया।

**मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं → अब मैं नहीं, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है।**

**कुलुस्सियों 1:27** जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। **[G3466 musterion ⚑]**

**यह भेद = तुम में मसीह, महिमा की आशा।**

**यूहन्ना 14:23** यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।

**यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा → और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: इस अध्ययन की पूरी कड़ी को उसके निष्कर्ष तक पालन करें। यीशु पिता के साथ तब से था जब कुछ भी नहीं बनाया गया था। यीशु पुराने नियम में मनुष्यों को दिखाई दिए, और वे मनुष्य जीवित रहे। यीशु एक छोटे नगर में एक स्त्री से जन्मे। यीशु को एक पहाड़ी पर, लकड़ी पर, नगर के बाहर मार डाला गया। यीशु कब्र से बाहर आए। बाइबल अब कहती है कि यीशु लोगों के भीतर रहते हैं। यह निष्कर्ष वही है जिस ओर यह अध्ययन आरंभ से ही बढ़ रहा था। इस अध्ययन का उद्देश्य कभी भी यह तर्क जीतना नहीं था कि यीशु कौन है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि जो यह सब कुछ है, वह तुम्हारे भीतर रहना चाहता है। यूहन्ना 14:23 पर भी ध्यान दें: "हम आएँगे।" वही बहुवचन स्वर जिसने उत्पत्ति 1:26 में बाइबल को खोला था, यहाँ भी उपस्थित है।)*

## L. वह फिर आ रहा है — और वह चुनाव जो सदा के लिए रहता है

## L1. वह आ रहा है, और हर आँख उसे देखेगी

**प्रेरितों के काम 1:9** यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। (भज. 47:5) (10) और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तब देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए। (11) और कहने लगे, "हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।" (1 थिस्स. 4:16)

**जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।" (1 थिस्स. 4:16.**

**प्रकाशितवाक्य 1:7** देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है; और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ। आमीन। (जक. 12:10)

**हर एक आंख उसे देखेगी + और वे भी जिन्होंने उसे बेधा।**

**L2. 2 थिस्सलुनीकियों 1:7** और तुम जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। (यूह. 1:14,15, प्रका. 14:13) **[G1557 ekdikesis ⚑]** (8) और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। (भज. 79:6, यशा. 66:15, यिर्म. 10:25) (9) वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। (प्रका. 21:8, मत्ती 25:41,46, यशा. 2:19,21) (10) यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया। (1 थिस्स. 2:13, 1 कुरि. 1:6, भज. 89:7, यशा. 49:3)

**धधकती आग में उन पर बदला लेते हुए जो परमेश्वर को नहीं जानते, और जो सुसमाचार को नहीं मानते → जब वह अपने संतों में महिमावान होने के लिए आएगा।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 को धीरे-धीरे पढ़िए। 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 दो समूहों के नाम लेता है, एक समूह के नहीं। पहला समूह परमेश्वर को नहीं जानता। दूसरा समूह सुसमाचार का पालन नहीं करता। जानना और पालन करना एक ही पद में एक साथ नाम लिए गए हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 1:10 पर भी ध्यान दें, जो उसी वाक्य का भाग है। यीशु का वही आगमन जो एक समूह के लिए आग है, वही दूसरे समूह के लिए महिमा है। यह एक ही घटना है। उस घटना में व्यक्ति किस पक्ष में है, यह अभी तय होता है, बाद में नहीं।)*

**L3. प्रकाशितवाक्य 19:11** फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धार्मिकता के साथ न्याय और लड़ाई करता है। (भज. 96:13) (12) उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। (प्रका. 19:16) (13) वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहने है, और उसका नाम 'परमेश्वर का वचन' है।

**जो उस पर बैठा हुआ था वह विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है → उसका नाम परमेश्वर का वचन कहलाता है।**

**प्रकाशितवाक्य 19:16** और उसके वस्त्र और जाँघ पर यह नाम लिखा है: "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।" (1 तीमु. 6:15)

**राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: प्रकाशितवाक्य 19:12 में एक छोटी सी पंक्ति पर ध्यान दीजिए। यीशु का एक नाम लिखा हुआ था जिसे कोई मनुष्य नहीं जानता था, केवल वे स्वयं ही उस नाम को जानते थे। जो नाम इस अध्ययन को दिए गए हैं, वे उसी अंश में मिलते हैं। वे नाम हैं विश्वासयोग्य और सच्चा। परमेश्वर का वचन। राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु।)*

## L4. पुस्तकें खोली गईं

**प्रकाशितवाक्य 20:11** फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। (मत्ती 25:31, भज. 47:8) (12) फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। (दानि. 7:10) (13) और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया; और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। (14) और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। (15) और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। (यूह. 3:36, 1 यूह. 5:11,12)

**पुस्तकें खोली गईं + एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है → जो कोई जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: प्रकाशितवाक्य 20:12 में सिंहासन के सामने दो प्रकार की पुस्तकें दिखाई देती हैं। एक प्रकार की पुस्तक में यह दर्ज होता है कि लोगों ने क्या किया। दूसरे प्रकार की पुस्तक में नाम दर्ज होते हैं, जिसे जीवन की पुस्तक कहा जाता है। प्रकाशितवाक्य 20:12 यह नहीं कहता कि किसी को कर्मों की पुस्तकों में लिखी बातों के कारण बचाया गया। प्रकाशितवाक्य 20:15 कहता है कि परिणाम तय करने वाली एक ही बात थी—क्या किसी व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा था।)*

## L5. वह चुनाव, जितनी स्पष्टता से बाइबल कभी कुछ कहती है उतनी स्पष्टता से कहा गया

**यूहन्ना 3:18** जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। (यूह. 5:10)

**जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है।**

**यूहन्ना 3:36** जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।"

**जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है.**

**रोमियों 6:23** क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

**क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है → परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: रोमियों 6:23 इस पूरे अध्ययन का केंद्रीय पद है। रोमियों 6:23 एक छोटा वाक्य है जिसके दो भाग हैं। पाप का एक भुगतान देना पड़ता है, और वह भुगतान मृत्यु है। वह भुगतान दो तरीकों में से एक तरीके से किया जाता है। या तो व्यक्ति स्वयं वह भुगतान सदा के लिए करता है, या व्यक्ति उसे उपहार के रूप में ले लेता है जो यीशु पहले ही चुका चुके हैं। यही संपूर्ण चुनाव है। कोई भी इस चुनाव को करने से बच नहीं सकता, क्योंकि न चुनना पहले तरीके को चुनने के समान ही है। इस अध्ययन में सब कुछ, उत्पत्ति 1:26 में "हम मनुष्य बनाएं" से लेकर प्रकाशितवाक्य 20 में सिंहासन तक, उसी एक निर्णय की ओर निर्मित होता रहा है। वह निर्णय लेने के लिए अभी भी समय है। यीशु अभी भी बुला रहे हैं।)*

**L6. प्रेरितों के काम 4:12** और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके।"

**और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं → क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके.**

## समापन

**प्रकाशितवाक्य 22:17** और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, "आ!" और सुननेवाला भी कहे, "आ!" और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंत-मेंत ले। (यशा. 55:1)

**और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं → वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंत-मेंत ले। (यशा. 55:1.**

**यूहन्ना 3:17** परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

**परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे → परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार: बाइबल में दिया गया अंतिम आमंत्रण मुफ़्त है, और यह हर किसी को दिया जाता है। इसमें प्रयुक्त शब्द है "जो कोई।" वह शब्द जानबूझकर किसी को भी बाहर नहीं छोड़ता। यह इस अध्ययन को पढ़ने वाले सबसे बुरे व्यक्ति को भी बाहर नहीं छोड़ता, या उस व्यक्ति को भी नहीं जिसने वर्षों से "नहीं" कहा है। यीशु, जो यह सब कुछ है, वही है जो कह रहा है, आओ। एक व्यक्ति को केवल आना है और जीवन का जल ले लेना है।)*

## अभ्यास प्रश्नोत्तरी

**उत्पत्ति 1:26 — और परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं:**
a) हमारी समानता के अनुसार
b) देखो, वह बहुत अच्छा था
c) उसने अपने ही स्वरूप में उसकी सृष्टि की

**यशायाह 7:14 — देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी, और उसके एक पुत्र उत्पन्न होगा:**
a) और तू उसका नाम यीशु रखना
b) और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी
c) और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे

**3. न्यायियों 13:22 — तब मानोह ने अपनी पत्नी से कहा, हम निश्चय मर जाएंगे:**
a) क्योंकि मैं अशुद्ध होठोंवाला मनुष्य हूँ
b) क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है
c) क्योंकि हमने परमेश्वर को देखा है

**4. भजन संहिता 110:1 — यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, तू मेरी दाहिनी ओर बैठ:**
a) जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं
b) अपने शत्रुओं के बीच में राज्य कर
c) जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न बना दूं

**5. इब्रानियों 1:8 — परन्तु पुत्र के विषय में वह कहता है, हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग है:**
a) धार्मिकता का राजदंड तेरे राज्य का राजदंड है
b) तेरे राज्य का राजदण्ड सीधा राजदण्ड है
c) और उसके कंधे पर प्रभुता होगी

**6. उत्पत्ति 22:8 — परमेश्वर होमबलि के लिये आप ही मेम्ना जुटाएगा:**
a) और उसे अपने पुत्र इसहाक पर रखा
b) तब वे दोनों संग संग चले
c) आग और लकड़ी को देखो

**7. 2 थिस्सलुनीकियों 1:9 — जिन्हें प्रभु के सामने से अनन्त विनाश का दण्ड मिलेगा:**
a) और उसकी सामर्थ्य की महिमा से
b) जो दूसरी मृत्यु है
c) और उसके प्रताप की महिमा के लिये

**उत्तर कुंजी: 1-a, 2-b, 3-c, 4-c, 5-a, 6-b, 7-a**

## इस उत्तर के पीछे के गवाह

*यह उत्तर किसी एक लेखक की आवाज़ पर निर्भर नहीं करता। मूसा, यहोशू, न्यायियों की पुस्तक के लेखक, इतिहास की पुस्तकों के लेखक, और दाऊद - ये सब इसमें योगदान देते हैं। यशायाह, मीका, और मलाकी भी ऐसा ही करते हैं। मत्ती, लूका, और यूहन्ना भी ऐसा ही करते हैं। पतरस पिन्तेकुस्त के दिन बोलता है। फिलिप्पुस एक सुनसान मार्ग पर बोलता है। पौलुस आठ पत्रियों में लिखता है। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इसे समाप्त करता है। यह पंद्रह आवाज़ें हैं, बाइबल की अट्ठाईस पुस्तकों में, उत्पत्ति की पुस्तक के पहले अध्याय से लेकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंतिम अध्याय तक। सभी पंद्रह आवाज़ें एक ही व्यक्ति के बारे में एक ही बात कहती हैं।*

## यह अध्ययन कैसे शाखाओं में विभाजित होता है

**→ एक छाया प्रकाश की ओर कैसे संकेत करती है: इसहाक की पीठ पर रखी गई लकड़ी (उत्पत्ति 22:6) और पुत्र की पीठ पर रखा गया क्रूस (यूहन्ना 19:17)। छाया पहाड़ पर प्रकट हुई। शरीर नगर के बाहर प्रकट हुआ।**

**→ शब्दों का महत्व कैसे है: एक अंग्रेज़ी शब्द "LORD" भजन संहिता 110:1 में दो भिन्न हिब्रू शब्दों को दर्शाता है। वे दो हिब्रू शब्द हैं यहोवा (H3068) और अदोन (H113)। मत्ती 22:45 में यीशु द्वारा दिया गया संपूर्ण तर्क इसी अंतर पर आधारित है।**

**→ यह आप पर कैसे लागू होता है: यीशु केवल वही नहीं है जो आया। यीशु केवल वही नहीं है जो आने वाला है। यीशु वही है जो अभी आप में रहना चाहता है (कुलुस्सियों 1:27, गलातियों 2:20)।**

**→ अनंतकाल के लिए इसका क्या अर्थ है: पाप की मजदूरी मृत्यु है। परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है (रोमियों 6:23)। ये ही दो एकमात्र तरीके हैं जिनसे कोई व्यक्ति कभी पाप का ऋण चुकाता है।**

**→ अलग विषय: भजन संहिता 110:4 और इब्रानियों की पुस्तक अध्याय 7, मलिकिसिदक के याजकपद की संपूर्ण शिक्षा को खोलते हैं। यह शिक्षा एक राजा और एक याजक को एक ही व्यक्ति में संयुक्त बताती है, जो व्यवस्था से भी पुराना है, और परमेश्वर की उस शपथ से बंधा है जिसे वह वापस नहीं लेगा। यह शिक्षा अपने आप में एक पूर्ण अध्ययन के योग्य है।**

**→ पगडंडी: उत्पत्ति 1:26 के "हम" और "हमारे" को व्यवस्थाविवरण 6:4 के "एक यहोवा" के साथ मिलाकर देखने से परमेश्वरत्व के पूर्ण अध्ययन का द्वार खुलता है। परमेश्वरत्व एक परमेश्वर है, जिसमें पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा पूरी बाइबल में अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में नामित किए गए हैं। इस अध्ययन ने उस पूर्ण अध्ययन को केवल सिरे से छुआ है।**

**→ पथांतर विषय: 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10 और प्रकाशितवाक्य 19:11-16 यीशु के पुनरागमन के संपूर्ण सिद्धांत की ओर खुलते हैं। इस सिद्धांत में यीशु के पुनरागमन की निश्चितता, यीशु के पुनरागमन की अचानकता, और यीशु के पुनरागमन के लिए जागते रहने की आज्ञा सम्मिलित है। स्पष्ट रूप से कहो: पवित्रशास्त्र यीशु के पुनरागमन की निश्चितता को बताता है और यीशु के पुनरागमन का समय-सारणी बताने से इनकार करता है (मत्ती 24:36, प्रेरितों के काम 1:7)। यह सेवकाई भी यीशु के पुनरागमन की समय-सारणी बताने से इनकार करती है।**

**→ अलग विषय: उत्पत्ति 3:15, स्त्री का वंश, प्रतिज्ञा किए गए वंश की पूरी कड़ी को खोलता है। यह कड़ी अब्राहम (उत्पत्ति 22:18), दाऊद (भजन संहिता 132:11) से होकर गुजरती है, और गलातियों 3:16 में स्पष्ट रूप से नामित की गई है।**

**→ संभावित प्रकाशन: याकूब ने उत्पत्ति 32 में उस मल्लयुद्ध करनेवाले से उसका अपना नाम पूछा और उसे अस्वीकार कर दिया गया (उत्पत्ति 32:29)। मानोह ने यहोवा के दूत से उसका अपना नाम पूछा और उसे बताया गया कि नाम पिली (H6383) था, जो जानने के लिए बहुत ही आश्चर्यजनक था (न्यायियों 13:18)। यशायाह तब कहता है कि हमारे लिए जो बालक जन्मा है वह अद्भुत कहलाएगा, पेले (H6382), उसी मूल शब्द से (यशायाह 9:6)। जो नाम पुराने नियम में छिपाया गया था, वह एक शिशु पर घोषित किया गया है। बाइबल के अंत में, स्वर्ग से बाहर सवार होकर आते हुए, यीशु के पास अब भी एक ऐसा नाम है जिसे उसके सिवाय कोई मनुष्य नहीं जानता (प्रकाशितवाक्य 19:12)। नाम दिया गया है, और यह नाम अब भी उससे अधिक गहरा है जो इस अध्ययन में बताया गया है।**

**एक खुला आमंत्रण — तुम जो भी हो, पढ़ते रहो**

*इस अध्ययन को पढ़ने के लिए आपका ईसाई होना ज़रूरी नहीं है। बहुत सी बातें आपको यहाँ तक लेकर आई हो सकती हैं। एक खोज आपको यहाँ ले आई हो सकती है। एक तर्क-वितर्क आपको यहाँ ले आया हो सकता है। एक सवाल जिसे आप वर्षों से अपने भीतर लिए फिर रहे हैं, वह आपको यहाँ ले आया हो सकता है। किसी और के विश्वास के बारे में जिज्ञासा आपको यहाँ ले आई हो सकती है। इस वेबसाइट पर सब कुछ आपका है, मुफ़्त में, आपकी अपनी भाषा में। हम कभी आपका नाम नहीं पूछते। हम कभी आपका देश नहीं पूछते। हम कभी नहीं पूछते कि आप क्या मानते हैं। एक अध्ययन यीशु का पूरा वर्णन नहीं कर सकता। हमने इस प्रश्न में अपनी पूरी शक्ति लगा दी, और फिर भी यह अध्ययन बाइबल से होकर केवल एक ही मार्ग पर चला। यीशु आरंभ से पहले विद्यमान थे। यीशु अभी विद्यमान हैं। यीशु फिर से आने वाले हैं। कोई भी एक पृष्ठ उस सब का वर्णन पूरा नहीं कर सकता। और अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। दया पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। बुद्धि पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। ज्ञान पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। धैर्य पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। भक्ति पर अध्ययन यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और अध्ययन आने वाले हैं। इन अध्ययनों को आप जिस भी क्रम में चाहें, पढ़ें। चलते-चलते हमारे स्रोतों की जाँच करें। इन अध्ययनों में हर आयत जानबूझकर पूरी छापी गई है। आपको हमारी बात पर कभी भरोसा करने की ज़रूरत नहीं है। आप स्वयं हर आयत को तौल सकते हैं।*

> *इसके बाद एक और आमंत्रण आता है। हम यह दिखावा नहीं करेंगे कि वह आमंत्रण छिपा हुआ है। वह आमंत्रण उस अध्ययन का है कि उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए। यदि आप अभी उसे पढ़ना चाहते हैं तो अभी वह अध्ययन पढ़ें। यदि आप पहले कुछ और पढ़ना चाहते हैं तो पहले कुछ और पढ़ें। कोई गिनती नहीं कर रहा है। द्वार दोनों ही स्थितियों में खुला रहता है। पौलुस ने नीचे दिए गए शब्द एक ऐसे नगर में कहे जो ऐसे देवताओं की वेदियों से भरा हुआ था जो उसके अपने परमेश्वर नहीं थे। पौलुस ने ये शब्द उन लोगों से कहे जिन्होंने पौलुस से उस नगर में आने का अनुरोध नहीं किया था।*

**प्रेरितों के काम 17:26** उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सीमाओं को इसलिए बाँधा है, (व्यव. 32:8) (27) कि वे परमेश्वर को ढूँढ़े, और शायद वे उसके पास पहुँच सके, और वास्तव में, वह हम में से किसी से दूर नहीं हैं। (यशा. 55:6, यिर्म. 23:23)

**उस ने एक ही रक्त से मनुष्यों की सारी जातियां बनाईं → कि वे प्रभु को ढूंढ़ें, और उसे पाएं + वह हम में से किसी से दूर नहीं है।**

## हिब्रू मुख्य शब्द

**"दूत"** — **H4397 malak** — भेजा हुआ एक जन; एक दूत; एक स्वर्गदूत

*यह शब्द एक कार्य का नाम देता है, स्वभाव का नहीं। यह शब्द मनुष्यों के लिए प्रयोग होता है। यह शब्द भविष्यवक्ताओं के लिए प्रयोग होता है। यह शब्द स्वर्गीय प्राणियों के लिए प्रयोग होता है। यह शब्द अपने आप में यह कभी नहीं बताता कि भेजा गया व्यक्ति क्या है। यह शब्द अपने आप में केवल यह बताता है कि एक व्यक्ति भेजा गया था। बाकी बात आस-पास का बाइबल पाठ बताता है। इन वृत्तांतों में आस-पास का बाइबल पाठ वास्तव में बाकी बात बताता है।*

**"परमेश्वर"** — **H430 elohim** — परमेश्वर; देवता; सच्चा परमेश्वर

*एलोहीम एक बहुवचन रूप है। एलोहीम शब्द का प्रयोग एकवचन क्रियाओं के साथ बार-बार एकमात्र सच्चे परमेश्वर के लिए किया गया है। यह शब्द स्वयं उस पूर्णता को समेटे हुए है जिसकी यह अध्ययन जांच कर रहा है।*

**"यहोवा"** — **H3068 Yehovah** — परमेश्वर का वाचा का नाम, जो केजेवी में बड़े अक्षरों में यहोवा लिखा गया है

*पुराने नियम में जहाँ भी बड़े अक्षरों में LORD शब्द आता है, वहाँ अंग्रेजी शब्द LORD के नीचे इब्रानी नाम यहोवा छिपा है।*

**"प्रभु"** — **H113 adown** — स्वामी; प्रभु; मालिक; राज करने वाला

*भजन संहिता 110:1 में, अदोन का रूप "मेरे प्रभु" पढ़ा जाता है। अदोन, यहोवा से एक भिन्न इब्रानी शब्द है - यहोवा वह प्रभु है जो उस पद में दाऊद के प्रभु से बोल रहा है।*

**"एक"** — **H259 echad** — एक; एकजुट; प्रथम

*एकद वह शब्द है जो "यहोवा हमारा परमेश्वर एक ही यहोवा है" में प्रयुक्त हुआ है। एकद वही शब्द है जो संध्या और भोर को एक दिन कहे जाने के लिए प्रयोग किया गया है। एकद वही शब्द है जो एक पुरुष और उसकी पत्नी के एक तन बनने के लिए प्रयोग किया गया है।*

**"एकलौता पुत्र"** — **H3173 yachiyd** — एकमात्र; अकेला; एकाकी; प्रिय

*उत्पत्ति 22 में इसहाक को तीन बार "तेरा एकलौता पुत्र" कहा गया है। याखीद का अर्थ है एक और केवल एक ही।*

**"लकड़ी / वृक्ष"** — **H6086 ets** — एक वृक्ष; लकड़ी; इमारती लकड़ी; एक तख्ता; एक छड़ी

*एत्स एक इब्रानी शब्द है जो जीवित पेड़ और काटी हुई लकड़ी दोनों को समाहित करता है। एत्स ही वह शब्द है जो उस लकड़ी के लिए प्रयोग हुआ जिसे अब्राहम ने इसहाक पर रखा था।*

**"अद्भुत"** — **H6382 pele** — एक आश्चर्य; एक अद्भुत बात; समझ से परे कुछ

*पेले वह पहला नाम है जो यशायाह 9:6 में उस बालक को दिया गया है।*

**"गुप्त / अद्भुत"** — **H6383 piliy** — अद्भुत; इतना अद्भुत कि जाना न जा सके

*पिलिय वह शब्द है जो यहोवा का दूत मानोह को अपने ही नाम का वर्णन करने के लिए देता है। पिलिय उसी मूल शब्द से आता है जिससे यशायाह 9:6 में "पेले" नाम आया है।*

**"कुँवारी"** — **H5959 almah** — एक अविवाहित युवती; एक कुँवारी; एक कन्या

*अल्माह वह शब्द है जो यशायाह 7:14 में प्रयोग किया गया है।*

**"इम्मानूएल"** — **H6005 Immanuwel** — हमारे साथ परमेश्वर है

*इम्मानुएल एक ऐसा नाम है जो स्वयं एक पूरा वाक्य है। मत्ती इस नाम का अनुवाद पाठक के लिए करता है।*

**"सेनापति / राजकुमार"** — **H8269 sar** — एक प्रधान व्यक्ति; एक मुखिया; एक सेनापति; एक राजकुमार; एक शासक

*सर वह पदवी है जिसका दावा यरीहो के बाहर खींची हुई तलवार लिए हुए पुरुष करता है।*

**"मैं हूँ"** — **H1961 hayah** — होना; अस्तित्व में होना; बनना

*हायाह वह मूल शब्द है जो जलती हुई झाड़ी में "मैं जो हूँ सो हूँ" के नीचे है।*

## ग्रीक मुख्य शब्द

**“वचन”** — **G3056 logos** — एक शब्द; एक कथन; कही गई बात; विचार की अभिव्यक्ति
*यूहन्ना यूहन्ना के सुसमाचार का आरम्भ किसी जन्म से नहीं करता। यूहन्ना यूहन्ना के सुसमाचार का आरम्भ आरम्भ से पहले से करता है।*

**“निवास किया”** — **G4637 skenoo** — तंबू गाड़ना; डेरा डालना; तंबू में रहना
*"वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच में डेरा किया।" यह पद परमेश्वर के मानव शरीर में रहने का वर्णन करता है, जैसे कोई व्यक्ति तम्बू में रहता है।*

**“एकलौता”** — **G3439 monogenes** — केवल जन्मा; अपने आप में अनोखा; अपनी तरह का एकमात्र
*मोनोजेनेस का प्रयोग पुत्र के लिए किया गया है। इब्रानियों 11:17 में मोनोजेनेस का प्रयोग इसहाक के लिए किया गया है।*

**“घोषित किया”** — **G1834 exegeomai** — बाहर ले जाना; बाहर लाना; पूरी तरह बताना; ज्ञात कराना
*परमेश्वर को किसी ने नहीं देखा। एकलौते पुत्र ने परमेश्वर को खुले में प्रकट किया है जहाँ परमेश्वर को देखा जा सके।*

**“मेल-मिलाप”** — **G2644 katallasso** — शत्रुता से मित्रता में बदलना; अनुग्रह में वापस लाना
*काटाल्लासो एक ही शब्द में क्रूस के पूरे कारण को बताता है।*

**“मेल-मिलाप”** — **G2643 katallage** — अनुग्रह की पुनर्स्थापना; अलग हुए दो पक्षों का पुनर्मिलन
*कटल्लगे उसी मूल से आया है जिससे ऊपर दिया गया कटल्लस्सो आया है। कटल्लस्सो मेल-मिलाप के कार्य को नाम देता है (दो अलग हुए व्यक्तियों के बीच मित्रता की पुनर्स्थापना)। कटल्लगे उस मेल-मिलाप के परिणाम को नाम देता है।*

**“क्षमा”** — **G859 aphesis** — दूर भेज देना; छुटकारा; मुक्त कर देना; क्षमा
*लहू बहाए बिना पाप की क्षमा नहीं होती।*

**“रहस्य”** — **G3466 musterion** — एक रहस्य; कुछ जो पहले छिपा था और अब बताया गया
*बाइबल में, रहस्य कभी सुलझाने की पहेली नहीं होता। बाइबल में रहस्य वह भेद है जिसे परमेश्वर ने बताने का निश्चय किया।*

**“प्रतिशोध”** — **G1557 ekdikesis** — जो न्याय से निकलता है; अन्याय का पूर्ण निवारण
*एक्डिकेसिस वह शब्द है जो 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 में प्रयोग हुआ है। एक्डिकेसिस का अर्थ अनियंत्रित क्रोध नहीं है। एक्डिकेसिस का अर्थ है न्याय का पूर्ण रूप से किया जाना।*

**“पहलौठा”** — **G4416 prototokos** — पहलौठा; पहले उत्पन्न हुआ
*पिता पुत्र के विषय में कहता है, "परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।"*

## SOURCES & CREDITS

Scripture: Hindi Indian Revised Version Bible (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEPBible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEPBible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).